पूज्यपाद गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. सा.

की 29 वीं पुण्यतिथि

(दि. 13 नवम्बर 2014)

पर भावभरी अनंत वंदनाओं

के साथ कोटिशः अदरांजली

सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

▪ वर्ष : 11 ▪ ▪ अंक : 7 ▪ ▪ 5 अक्टूबर : 2014 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

परमात्मा महावीरस्वामी का जाप मंत्र

इन मंत्रों का प्रतिदिन जाप करें,
दीपावली के अवसर
पर अवश्य करें।

।। ओम् ह्रीँ श्रीँ नमः श्री महावीरस्वामिने नमस्तुभ्यं मम सर्व कार्यं सिद्धं कुरु कुरु स्वाहा ।।

लब्धि निधान श्री गौतमस्वामी का जाप मंत्र

।। ओम् नमो भगवओ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स
अक्खीणमहाणस ह्रीँ अवतर अवतर
अक्खीणमहाणसी स्वाहा ।।

दादा गुरुदेव का मंत्र

।। ओम् आँ क्रौँ ह्रीँ श्रीँ श्री जिनदत्तसूरि मणिधारी
जिनचन्द्रसूरि जिनकुशलसूरि जिनचन्द्रसूरि
एहि एहि सुप्रसन्नोभव मम
गृहे ऋद्धिं वृद्धिं सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।।

श्रुतदेवी श्री सरस्वती का जाप मंत्र

।। ओम् ऐँ श्रीँ वद वद वाग्वादिनी भगवति सरस्वति ह्रीँ नमः ।।

श्रीदेवी श्री महालक्ष्मी का जाप मंत्र

।। ओम् श्रीँ ह्रीँ क्लीँ लक्ष्म्यै नमः ।।

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

।। श्री शांतिनाथाय नमः ।।

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तकुशल सद्गुरुभ्यो नमः ।।

।। गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः ।।

राजस्थान की धन्यधरा

श्री चौहटन नगरे

उपधान तप

जप, तप और क्रिया का त्रिवेणी संगम

श्री उपधान तप आराधना

आशीर्वाद :

प. पू. आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म.सा.

आज्ञा प्रदाता
प. पू. आचार्य
श्री कैलाशसागरसूरिजी म.सा.

प्रत्यक्ष कृपा
प. पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

परम पावन निश्रा : प.पू. आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म.सा. के
शिष्य प्रशिष्य पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा.
पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा.

प्रथम प्रवेश
मिगसर वदि 12
बुधवार
19.11.14

द्वितीय प्रवेश
मिगसर वदि 14
शुक्रवार
21.11.14

मोक्षमाला
माघ वदि 2
बुधवार
07.01.15

उपधान स्थल

जैन श्वे. धर्मशाला, पो. चौहटन
फोन (02989) 286335

आयोजक एवं निमंत्रक

श्री कुशल-कान्ति उपधान तप आराधना समिति
श्री जैन श्वे. श्रीसंघ चौहटन (राज.)

सम्पर्क सूत्र : मो. : 07073900641 (ऑ.) मोहनलालजी सेठीया (094614 89609)

आगम मंजूषा

आचार्य भद्रबाहुसूरि

णाणं पयासगं, सोहओ तवो, संजमो य गुत्तिकरो।
तिण्हं पि समाजोगे, मोक्खो जिणसासणे भणिओ॥

आवश्यक निर्युक्ति 103

ज्ञान प्रकाश करने वाला है, तप विशुद्धि एवं संयम पापों का निरोध करता है। तीनों के समयोग से ही मोक्ष होता है– यही जिनशासन का कथन है।

तीर्थंकर परमात्मा श्री महावीर के निर्वाण कल्याणक व गणधर श्री गौतमस्वामी के केवलज्ञान प्राप्ति से पावन यह मंगलमय दीपावली पर्व आप सभी के जीवन में ज्ञान रूपी रोशनी का संचार करें...

- आपका अपना जहाज मंदिर परिवार

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	05
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	06
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	07
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	08
5. श्रमण चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	09
6. कविता	चन्द्रकुमार जैन	13
7. कविता	चिराग जैन	13
8. सावधान : वरक मासांहार है	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	14
9. संस्कृत के चोर अंग्रेज		16
10. चतुर्भंगी का चमत्कार	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	17
11. श्री जैन शारदा-महालक्ष्मी पूजन दीपवली पूजन विधि		18
12. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	23
13. समाचार दर्शन	संकलन	24
14. जहाज मन्दिर पहेली-102	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	39
15. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	46
16. कविता : मैं समय हूँ	मेधवी जैन	46

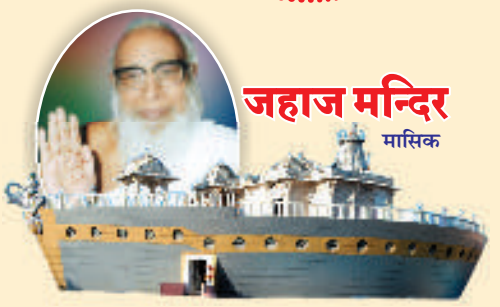

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 7 5 अक्टूबर 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.
अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ	: 7,000 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

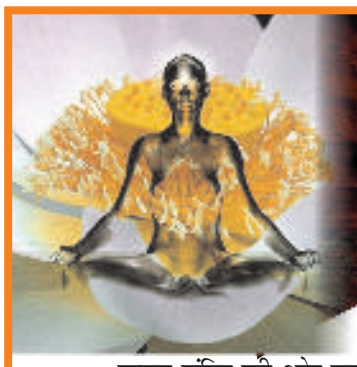

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

परमात्म–प्रेम

कदम मंदिर की ओर बढ गये हैं। परमात्मा की भक्ति कर रहा हूँ। अकेला हूँ। स्तवन गा रहा हूँ। धीमी आवाज में गा रहा हूँ। मैं ही गाने वाला हूँ... मैं ही सुनने वाला हूँ! पर आज हृदय गा रहा है। आज ही तो सही रूप से जाना है कि मेरे परमात्मा कैसे है!

सुनता तो हमेशा था। पर समझ पहली बार आया। भक्ति भी बहुत की थी, पर आज का अनुभव अलग था। हमेशा मंदिर आता था, पर कुल परम्परा के कारण! कुछ मांगने...! अपने संसार को को सुखी बनाने की प्रार्थना लिये...!

पर आज भावों की नई दुनिया में मैंने प्रवेश किया था। आज भक्ति का रंग अनूठा था। लगता था कि मैं ही बदल गया हूँ।

क्योंकि आज ही मुझे परमात्मा के दिव्य स्वरूप का बोध हुआ है। ऐसे परमात्मा को पाकर आज मैंने परम धन्यता का अनुभव किया है। आज मेरे अन्तर में प्रेम प्रकट हुआ है। परमात्मा को एकटक देख रहा हूँ। पलक को झपकाना अच्छा नहीं लग रहा है। मन करता है देखता रहूं अनंत काल तक!

प्रेम तो संसार में मैंने कईयों से किया था। पर मेरा मन जानता है कि करता कम था, पाने की चाह ज्यादा थी। अपेक्षाओं की विशाल दुनिया मेरे मन में थी। जिनसे प्रेम करता था, उनसे ज्यादा चाहता था। नहीं मिलता तो रोष होता... मेरी इच्छा के अनुसार नहीं मिलता तो मन उसे ठुकरा भी देता।

उस प्रेम में स्वार्थ और सौदा था। यह आज जाना था। आज जाना था कि प्रेम करने योग्य केवल और केवल परमात्मा है। परमात्मा के सिवाय ऐसा कोई व्यक्ति या तत्व नहीं है, जिनसे प्रेम किया जा सके।

क्योंकि परमात्मा का प्रेम मेरी अपेक्षाओं से कई गुणा मुझ पर बरस रहा है। मैं प्रेम नहीं करता था, तब भी उनका प्रेम तो मुझे प्राप्त ही था।

और मेरा रोम रोम परमात्मा की भक्ति में डूब गया है। मुझे श्रेणिक महाराजा का वह उदाहरण याद आया है। स्वर्गवास के बाद जब उनका अग्निसंस्कार हो रहा था। हड्डियां जब चटक रही थी, तब उनमें से **वीर वीर** की ध्वनि आ रही थी।

मैं सोचता हूँ– परमात्मा महावीर के प्रति क्या प्रेम होगा..! क्या भक्ति होगी..! और मैं प्रार्थना करता हूँ– प्रभो! मुझे ऐसा प्रेम देना... ऐसी भक्ति देना...!

बसो चेतन निज गेहि

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

गतांक से...

राह के कष्ट सेठ के हृदय को खिन्न बना देते पर पुत्र-मिलन की उत्कण्ठा, उनकी सारी उदासी और खिन्नता को क्षण भर में काफूर कर देती। सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, कंकर-कांटे सब कुछ सहते हुए आखिर थके कदमों से उन्होंने मंजिल पा ली। कदम आगे बढ़ने से इंकार कर रहे थे पर हृदय बैठने से इंकार कर रहा था। अनवरत, पूरा दिन चलकर फर्म का पता पूछते, पुत्र की प्रसिद्धि सुनते हुए मुकेश के सामने पहुँच गये।

मिलन की उत्कण्ठा मानव-मन को कितना विकल बनाती है यह तो कोई अनुभवी ही बता सकता है।

पुत्र दुकान पर बड़े-बड़े सेठों के बीच बैठा कोई विशेष वार्ता पर मन्त्रणा कर रहा था। अपने सामने फटे-हाल पिता को देखते ही पहचान गया। तुरन्त आगे बढ़ना ही चाहता था कि आधुनिक सभ्यता ने अपना जोर दिखाया।

मुकेश ने मन ही मन सोचा- अरे! अगर मैं अपने पिता के चरण-स्पर्श करूँगा तो निश्चित ही मेरी जिल्लत होगी। ये नगर के कर्णधार मेरे खानदान के बारे में क्या-क्या धारणाएँ बनाएँगे। अत: बाद में मुलाकात करना ही अच्छा लगेगा। मानसिक द्वन्द्वको बिना चेहरे पर लाये उसी मुस्कान के साथ वार्ता में संलग्न हो गया।

सेठ ने सोचा- शायद इसने मुझे देखा नहीं है अथवा पहचाना नहीं है और शायद यह भी हो सकता है कि मुझे बुलाने में शर्म भी महसूस करता हो पर मैं तो इसका बाप हूँ। मुझे तो शर्म नहीं आनी चाहिए। मैंने इसका पालन-पोषण किया, मुझे क्या शर्म है?

तुरन्त वे गद्दी पर चढ़ गये। नौकर रोकते ही रहे और वे धूल-धूसरित पाँवों से स्वच्छ गद्दी पर जा विराजे। अब तो बिचारा मुकेश ऐसा शर्माया कि उसका सिर ही झुक गया। मन ही मन उसने पिता को हजार गालियाँ दीं पर सभ्यता का तकाजा करके मुंह से कुछ भी नहीं बोला।

नौकर, मुनीम सेठ की इस अशोभनीय हरकत से क्रोध में कांप उठे। उम्र का लिहाज कर मुनीम ने अपने क्रोध को दबाकर सेठ से पूछा- 'सेठजी! आप हमारे लिए अनजान हैं और हम आपके लिए। अत: आपको इस प्रकार परायी गद्दी पर नहीं चढ़ना चाहिये। अब कृपा कर आप नीचे उतर जाइये।'

पुत्र के अविनयी व्यवहार से सेठ तो पहले से भरे हुए ही थे। शक्ति न होते हुए भी इतनी दूर से चल कर आये थे पर पुत्र का ऐसा व्यवहार देखकर उनकी सारी आशाएँ बिखर गयी थीं। दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया था। वे अपने आपको अपमानित महसूस कर रहे थे।

मुनीम के शब्द सुनते ही उनको ताव आ गया। उन्होंने लगभग डाँटते हुए कहा- बेटे की गद्दी क्या बाप के लिए गैर होती है? जाओ अपना काम करो।

मुनीम तो असमंजस में पड़ गया। कौन बाप और कौन बेटा?

उसने पुन: कहा- यह गद्दी आपके

बेटे की कैसे हुई? सेठजी से आपका क्या सम्बन्ध है? जरा स्पष्ट कीजिये।

सेठ ने अब कुछ धैर्यता और शान्ति से मारवाड़ी भाषा में कहा- ''मैं इसकी मां का माटी हूँ।''

मुनीम को बड़ा आश्चर्य हुआ। यह तो उसे मालूम था कि मुकेश दत्तक पुत्र है पर यह नहीं मालुम था कि उसका असली पिता इतना गरीब है। उसने दोनों के चेहरे की बनावट देखी। दोनों के चेहरे की साम्यता पिता-पुत्र के सम्बन्ध को स्पष्ट कह रही थी।

उसे मुकेश जो आज तक आदर्शवादी युवक लगता था उससे घृणा हो गई। पिता इतना दु:खी, फिर इतनी दूर से चलकर आया तब भी आधुनिक सभ्यता के साये में पला बेटा उठकर सामने न जा सका। ऐसे सेठ की नौकरी को धिक्कार है।

उसने तुरन्त हिसाब किया और मुकेश से कहा- आज से आप नया मुनीम ढूंढ़ें। मैं ऐसी नौकरी पर थूकता हूँ। जो अपने बुजुर्गों की इज्जत को ही न समझे, उसकी नौकरी से क्या फायदा?

दूसरी ओर सेठ भी गद्दी से नीचे उतर आया था, यह कहते हुए कि हम तो चार दिन जैसे-तैसे निकाल देंगे, पर पंचों का कर्ज उतार दें। बस, यही कहने के लिए मैं इतनी दूर से आया था। तूं सुख में रहना।

मुकेश मुनीम और पिता की सच्ची बातें सुनकर होश में आया। उसका नशा काफूर हो गया। वह तुरन्त खड़ा हुआ और अपने पिता से क्षमायाचना की, रहने की विनती की और अन्त में जब स्वयं साथ चलने का वादा किया तब कहीं जाकर सेठ दीवानचन्द का क्रोध शान्त हुआ।

मुनीमजी से भी उसने अपने किये का पश्चात्ताप किया। भविष्य में इन झूठी शान-शौकत के फेरे में न पड़ने का विश्वास दिलाया तब मुनीम ने पुन: बहीखाते सँभाले।

समाप्त

श्री सुपार्श्वजिन स्तवन

प्रीत की रीत

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

गतांक से आगे...

उपाधि जो तीसरा अवरोध है। यह उपरोक्त दोनों से अधिक खतरनाक है। यद्यपि है यह भी भौतिक स्तर का परंतु है सबसे गहरा ! डॉ हनीयेन ने बहुत महत्व की सूचना अपने दीर्घकालीन शोध के परिणाम स्वरूप प्रस्तुत की कि मन, चेतना का आंतरिक स्तर नही हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ, ईर्ष्या, आवेग आदि चेतना के आंतरिक स्तर है। ये समस्त वृत्तियाँ चेतना के अंतर से उठती है। सद्प्रवृत्तियाँ हो या असद् प्रवृत्तियाँ वे सारी चेतना के स्तर से उठती है। इन्हें ग्रन्थि-तंत्र भी कह सकते हैं। जीवन की वृत्तियों में परिवर्तन लाने के लिये ग्रन्थियों को बदलना नितांत अनिवार्य है। समस्त उत्तेजनाऐं, आवेश, आकांक्षाऐं, अभिलाषाऐं, वासनाऐं जो अंत:स्रावी ग्रन्थियों से उठती है, ये ही उपाधियाँ हैं।

जब इन तीनों आधि, व्याधि और उपाधि के प्रभाव से हम मुक्त हो जाते हैं तब हमारा समाधि में प्रवेश हो जाता है। और वही जीवन का असली और अखंड आनंद है। समाधि को पाने के लिए इन तीनों पर नियंत्रण और अनुशासन चाहिए। जीवन आनंद से परिपूर्ण और तरबतर हो जाता हैं। जब समाधि का आनंद उपलब्ध होता है तो क्षणिक और अशाश्वत इन्द्रियानुभुति हमें आकृष्ट नहीं कर सकती।

श्रीमद्जी इसी समाधि को पाना चाहते हैं परमात्मा चूंकि उस समाधि में लीन है अत: उन्हें ही अपना आदर्श मानकर इस भूमिका में प्रवेश करते हैं।

31

मेरे गुरुदेव

पूज्य गुरुदेवश्री के लघु गुरू-भ्राता पूज्य मुनिराज श्री दर्शनसागरजी म.सा. ने पहले तपागच्छ में दीक्षा ग्रहण की थी। कारणवश उन्होंने तपागच्छ छोडा था। पर उनका मन गृहस्थ दशा में जाने का नहीं था। वे योग्य गुरू की तलाश में लगे। घुमते घुमते वे वि.सं. 2002 में पूज्य गुरुदेव श्री कान्तिसागरजी म.सा. के पास पहुँचे। कुछ दिन उनके पास रहे तो उन्हें लगा कि उनकी तलाश पूरी हुई।

और उन्होंने पूज्यश्री से दीक्षा प्रदान करने की विनंती की।

पूज्यश्री ने अपने गुरुदेव पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के पास समाचार भेजे। पूज्य आचार्यश्री की अनुमति प्राप्त कर उन्होंने उन्हें दीक्षा प्रदान की। तपागच्छ की दीक्षा-पर्याय का विच्छेद कर पुनर्दीक्षा से पर्याय का क्रम प्रारंभ हुआ।

वे पूज्य गुरुदेवश्री के शिष्य बनना चाहते थे। परन्तु पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा- मेरे गुरुदेव बिराजमान है। उनकी आज्ञा से मैं दीक्षा दे दूंगा पर शिष्य तो मैं पूज्य गुरुदेवश्री का ही बनाऊँगा। क्योंकि हमारे समुदाय की यह परम्परा है कि गुरू के बिराजमान रहते शिष्य कभी भी अपना शिष्य नहीं बनाता।

पूज्य गुरुदेवश्री ने उन्हें अपना गुरु भ्राता बनाया। पर शिष्य बनाना स्वीकार नहीं किया। यह पूज्यश्री का विनय था, लघुता थी।

पूज्य मुनिराज श्री दर्शनसागरजी म.सा. ने पूज्यश्री के प्रति अपना शिष्यत्व भाव ही दर्शित किया। उनका विनय हम सब के लिये आदर्श प्रेरणा रूप था।

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

श्रमण चिंतन

24

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का विवेचन

"साधु' अर्थात् सौम्यता का चाँद

'गृहस्थ' अर्थात् आग का गोला

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

श्रमण चिन्तन के एक-एक आलेख के द्वारा हम संयम का एक-एक सोपान तय करते हुए साधुता के सदानंद का रसपान कर रहे हैं।

एक तरफ संयम के महात्म्य का लेखन, और दूसरी तरफ दशवैकालिक की दिव्यता से परिपूर्ण रतिवाक्या (रइवक्का) चूलिका का विश्लेषण। दोनों के संगम ने एक-दूसरे के महत्त्व को हजारों-लाखों-करोडों गुणाकार ही नहीं, अनन्त गुणाकार वर्धमान कर दिया है।

संयम साधक जीवन का प्राणाधार है। यद्यपि संयम अपने आप में रसमय, सुधामय और मधुमय है तथापि कष्टों के कारण संयम के प्रति अरति और संसार के प्रति रति उत्पन्न होने के उपरान्त स्थितप्रज्ञ बनने के लिये दो तथ्यों का चिन्तन अनिवार्य है- एक है संयम की मूल्यवत्ता का बोध और दूसरा है काम भोगों की निस्सारता का भान!

उत्तराध्ययन सूत्र के **'सल्लं कामा विसं कामा कामा आसी विसोवमा'** इस मंत्र का संदर्भ देते हुए गुरू महाराज कह रहे हैं- मुनि! तूं कान खोल कर सुन! एकाग्र होकर सुन! 'जो मनुष्य विषय भोगों से विरक्त रहते हैं, वे साधक दुस्तर भव-समुद्र का पार पा जाते हैं पर जो आसक्त साधक मोहनीय कर्मवशात् संयम का उज्ज्वल वेश को छोडकर पुनः पंकिल संसार में लौट जाते हैं, वे उत्प्रव्रजित श्रमण गृहवास में केवल और केवल विषाद और अवसाद ग्रस्त होते हैं तथा हिंसा आदि सावद्य प्रवृत्तियों के कारण बहुल पाप कर्मों का उपार्जन करते हैं, इसके साथ बाल मरण प्राप्त करके दुर्गति में जाते हैं।

प्रस्तुत है दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का तेरहवाँ सूत्र **'सावज्जे गिहवासे अणवज्जे परिआए'**

गृहस्थ का जीवन सावद्य, हिंसक और पापपूर्ण है। उसकी सारी प्रसन्नता कुविचार, मायाचार और व्यभिचार पर निर्भर है। पल-पल हिंसा का खून बहता है। हर क्षण समता और अभयदान का कत्ल होता है। खाना, पीना, उठना, बैठना, हर प्रवृत्ति में हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्मचर्य और परिग्रह, इन महापापों का बंध है। हर विचार में क्रोध, मान, माया और लोभ की अपवित्रता है। हर वाक्य में अप्रिय, असत्य और अमृदु शब्दों का दावानल है।

-सुबह से शाम तक पाप है।
-शाम से रात तक अधर्म है।
-रात से सुबह तक हिंसा है।
-जन्म से मरण तक दुःख है।
-मकान से दुकान तक बंधन है।
-पाने से खोने तक दुर्ध्यान है।
-परिवार से व्यापार तक क्लेश है।
-गाँव से शहर तक बीमारियाँ हैं।

इसके विपरीत

दीपावली की हार्दिक शुभकामना...

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

तुम देखो कि श्रमण का जीवन हिंसामुक्त होने से कितना प्रसन्नता युक्त होता है।

षट्काय की जयणा भव भव में स्वस्थता, निरोगता, दीर्घ आयुष्य, यश, संपत्ति और उत्कृष्टतः मोक्ष सुख देती है। साधु जीवन में पृथ्वीकाय की विराधना से विरति! न मकान बनाना, न धातुओं का संग्रह करना, यहाँ तक सचित्त मिट्टी, नमक, पाषाण आदि का भी स्पर्श नहीं करना।

-अप्काय के जीवों को जीवन दान! सचित्त जल का सर्वथा त्याग। न कुआँ, बावडी, तालाब बनवाना, न स्नानादि आरम्भ करके सचित्त जल के जीवों की विराधना करना! यहाँ तक कि पेय जल भी निर्दोष हो तो ही लेना! कितना जबरदस्त संयम के प्रति प्रेम!

-तेजस्काय के जीवों की अहिंसा। दीपक, चूल्हा आदि न जलाना, न जलवाना, और उस पाप की अनुमोदना का भी त्याग। वाह भाई वाह! यह तो महाप्रतिज्ञा हुई।

-वायुकाय के जीवों को अभयदान! कितनी भी भयंकर उष्णता, ताप का अनुभव हो, चित्त बेचैन होने लगे, तब भी पंखे का प्रयोग नहीं। यहाँ तक कि वस्त्रादि से भी हवा की कामना नहीं! धन्यवाद है ऐसे महामुनीन्द्रों को।

-वनस्पतिकाय के छेदन-भेदन से विमुक्ति! फल, फूल, छाल, काष्ठ, मूल, पत्ता, बीज आदि के जीवों की विराधना से मुक्त साधु उनका कभी स्पर्श भी नहीं करता, तब उनका छेदन-भेदन तो बहुत दूर की बात है।

-शंख, कृमि आदि द्वीन्द्रिय, जूं, चींटी, चींटा, उदेहि आदि त्रीन्द्रिय, मच्छर, बिच्छू, मक्खी, भ्रमर आदि चतुरिन्द्रिय, मनुष्य को मछली आदि जलचर, बकरी, मुर्गा आदि स्थलचर, कबुतर-क्रोंच आदि खेचर, पंचेन्द्रिय जीवों को संपूर्ण अभयदान का महादान केवल साधु ही दे सकता हैं। अरे! यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन दस हजार गायों को अभयदान देता है तब भी साधु के एक दिन के अहिंसा धर्म के सम्मुख ऐसे ही अल्प और अपूर्ण है जैसे सिंधु के सामने बिंदु! पर्वत के सामने राई।

-तुम ही देखो! शास्त्रों को याद करो।

-अभयदान की भावना से धर्मरूचि अणगार एकावतारी बनते हैं पर कालसौकरिक कसाई हिंसा के महापाप के कारण नरक की वेदना को भोगता है।

-उच्च ब्रह्मचर्य निर्मल मैथुन-विरति के कारण ही आर्य स्थूलिभद्र त्रिलोक में सुयश पाते हैं जबकि मैथुन के कारण संसारी भव-भव का विस्तार कराते हैं।

-इसे विरति धर्म की बलिहारी ही कहेंगे कि इससे मुनि अर्जुनमाली, दृढप्रहारी, चिलाती पुत्र आदि तप की महाग्नि में तपकर कठोर, घोर, निबिड और निकाचित कर्मों का क्षय कर शीघ्र मोक्षगामी हुए जबकि कर्मों की जंजीर में बंधकर कण्डरिक, रावण, दुर्योधन आदि दुर्गति के पात्र बने।

संयम का सुंदर विमान... सौम्य उद्यान... समुज्ज्वल परिधान...। यहाँ प्रतिक्षण अहिंसा का बोध धर्म की पौध को हराभरा रखता है और संसार में पापों की अग्नि पुण्य की फसल को खा जाती है। हे साधु! एक श्रावक भी यदि उच्च गुणों का जीवन धारण करे, तब भी उसकी अहिंसा सवा विस्वा ही होती है जबकि साधु की वीस विस्वा दया होती है। लोहे का एक गर्म गोला जब पर्वत से नीचे लुढकता हुआ आता है तब सारी हरियाली, जीव-राशि को भस्मीभूत कर देता है, वैसे ही गृहस्थ एक अग्नि से तपते गोले से भी भंयकर है जो प्रतिक्षण मन-वचन काया से जीवों का हनन करता है।

संसार काजल की कुप्पी के समान है जिसमें कोई भी बेदाग और शुभ्र-श्वेत नहीं रह सकता। साधु को चित्रकार लोहकार, स्वर्णकार, कुम्भकार, कलाकार आदि की कोई जरूरत ही नहीं होती। अपरिग्रह की साधना उसे उत्तम और अनुत्तर अहिंसा धर्म की सौगात देती है जबकि गृहस्थ को कदम-कदम पर नाई, दर्जी, सुनार आदि की जरूरत पड़ती हैं। परिग्रह उसके जीवन के सुख को नष्ट कर देता है।

दीपावली पर्व
पर आपको बधाई...
Happy Diwali
श्री व्यापारीलालजी
गोदावरीदेवी
अंजुदेवी-रतनलाल, कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार, मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार (पुत्र-पुत्रवधु),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
(पौत्र-पौत्रवधु), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक (पौत्र),
भव्या, तनिषा (पौत्री),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
(बहिन)
प्रतिष्ठान
रतनलाल गौतमकुमार
बोहरा ब्रदर्स
403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723
श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा (हालावाला) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : (079) 22869300

-साधु-जीवन भाव-प्रधान होता है।
-गृहस्थ-जीवन द्रव्य प्रधान होता है।
-शुभ भाव से संयम की सुरक्षा होती है।
-अशुभ भाव से समकित भी चला जाता है।
-गृहस्थ अप्रशस्त कषायी होता है।
-साधु प्रशस्त पर मंद कषायी होता है।
-गृहस्थ पुनः पुनः पाप बंध करता है।
-साधु प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप से कर्म-रज को धो डालता है।

वत्स! संसार का जीवन नरक का द्वार है। थोडा समझदार बन। सहनशील बन। धर्मप्राण बन। हिंसा से कभी भी सुख नहीं मिलेगा। यदि

0 आग से कमल खिले...
0 जहर से जीवन मिले...
0 तुला में सुमेरू तुले...

तो समझना कि पाप से पुण्यानुबंधी पुण्य मिले। हिंसा से शांति, सदभावना और सुख का संचार हो। सावद्य जीवन दुर्गति, दुर्मति और दुर्व्यवहार की खाई है और निरवद्य जीवन सद्गति, सन्मति और सिद्धगति का शिखर।

इसलिये अच्छी तरह सोच, विचार कर और जीवन में संयम को आत्मसात् कर। आज मुझे बस इतना ही कहना है।

अँधेरे के आवरण पर आघात है दीपावली
कुभाव-कुदृष्टि पर तुषारापात है दीपावली
जागरण है, चेतना-विश्वास है दीपावली
सदभाव के सदैव बिलकुल पास है दीपावली
धन से धर्म का अनुबंध है दीपावली
खुद की हस्ती का जैसे छंद है दीपावली
ज्ञान का विवेक से संबंध है दीपावली
रौशनी को जीने का एक ढंग है दीपावली

-चन्द्रकुमार जैन

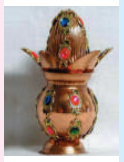

जीवन बाती से जुडे, पुरुषार्थों की आग
हर आंगन संदीप्त हो, जाय अंधेरा भाग।।
पावन पुष्पों से गुँथें, ऐसे बन्धनवार
जिन्हें लगाकर सज उठें, सबके तोरणद्वार।।
भोर समीरों में घुलें, गेंदे के मकरंद
सांझ ढले कर्पूर की, हर दिसि भरे सुगन्ध।।
लक्ष्मी का अवतार हो, हाथ लिए संतोष
जिससे खाली हो सकें, सभी लालसा कोष।।

-विराग जैन

सावधान! वरक मांसाहार है...

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

विवाह, गृह प्रवेश, जन्मदिन आदि उत्सवों पर हम देखते हैं कि प्रचुर मात्रा में वरक का प्रयोग हो रहा है। मिष्ठान्न की किसी दुकान पर चले जाये या फल बेचने की दुकान को देखे तो वहाँ भी मिठाई तथा फलों की चमक बढाने के लिए वरक का भरपूर उपयोग होता दिखाई देता है। च्यवनप्राश, पान, सुपारी, मुखवास आदि के सौन्दर्यीकरण के लिये तो वरक का प्रयोग होता ही है, साथ-साथ कतिपय आयुर्वेदिक औषधियों में भी वरक का उपयोग हो रहा है। पर क्या कभी आपने विचार किया है कि-

- वरक (Silver Leaf) क्या है?
- वरक कैसे बनता है?
- वरक की उपयोगिता क्या है?

वर्तमान की Manage, money और Machine प्रधान जीवन शैली ने व्यक्ति को इतना बेहोश-बेभान बना दिया है कि इन छोटी-छोटी पर बड़ी महत्व की बातों पर ध्यान देने के लिये उसके पास समय का नितान्त अभाव है। पर इस अज्ञानता के दुष्परिणाम जब सामने आते हैं, तब वह व्यक्ति न संभल पाता है, न सह पाता है।

वरक निर्माण की प्रक्रिया

वरक दिखने में जितना मनमोहक और सुन्दर है, उसके निर्माण की प्रक्रिया उतनी ही हिंसात्मक और घिनौनी है। पूना की एक संस्था BEAUTY WITHOUT CRUELTY, जिसने पहले लेदर के पर्स, बेल्ट, जूते आदि के एवं सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री के निर्माण में होने वाली क्रूर हिंसा को Video के माध्यम से प्रसारित करके सचेत किया था, उसी ने वरक बनाने की विधि का बारिकी से अध्ययन किया है। उसके द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार वरक बनाने में पशु के ताजे चमड़े का उपयोग किया जाता है। एक दिन का भी पुराना चमडा इसमें उपयोगी नहीं होता।

वरक-निर्माता न केवल कत्लखाने-बूचड खाने के संपर्क में रहते हैं अपितु स्वयं वहाँ जाकर ऐसे पशुओं का चयन करते हैं जिनकी चमडी मुलायम एवं नरम हो।

उन निर्दोष बेजुबां पशुओं का बेरहमी से कत्ल किया जाता है तथा आंतों की चमडी से पतली तथा बारीक झिल्ली अलग करके रसायन के घोल में भिगोकर रखी जाती है। निर्धारित अवधि के बाद उसे सूखाकर उसी झिल्ली के टुकडे करके पौच बनाये जाते हैं और पौच से किताब बनती है।

सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त आंकडों के अनुसार एक बैल से प्राप्त झिल्ली से लगभग 20 से 25 पौच तैयार होते हैं तथा कुल 360 पौचों की एक किताब होती हैं। इस किताब को किसी बछडे या भेड के चमडे की थेली में रखा जाता हैं।

वरक बनाने के लिये हर पौच में सोने या चाँदी के छोटे टुकडे रखकर थैली को कूटा जाता है। लगभग 7-8 घण्टे तक कूटने पर वे टुकडे फैलकर वरक बन जाते हैं।

वरक बनाने के लिये विशेषत: बैल के आंत की झिल्ली का प्रयोग होता है क्योंकि वह घण्टों तक कूटने के बाद भी फटती-कटती नहीं है।

वरक की किताब केवल आगरा में ही बनती है पर वरक तो मुम्बई, अहमदाबाद, जयपुर, वाराणसी, कानपुर, गया, मेरठ, इन्दौर, पटना, भागलपुर, मुजफ्फरपुर आदि अनेक शहरों में बनता है। एक वर्ष में वरक बनाने की जितनी किताबें बनती है, उनके लिये अनुमानित 40 से 45 करोड पशुओं का निर्दयतापूर्वक वध किया जाता है।

यह भी एक भ्रम ही है-

प्राय: यह सुनते हैं कि चाँदी एक ऐसा पदार्थ हैं जिसमें अन्य तत्त्व किसी भी तरह से मिश्रित नहीं हो सकते। परन्तु वैज्ञानिक अनुसंधान के आलोक में हम वास्तविकता से रूबरू हो सकते हैं।

भारतीय विष विज्ञान अनुसंधान-लखनऊ द्वारा बाजार में उपलब्ध वरक पर अनुसंधान करने पर यह निष्कर्ष सामने आया है कि पशु के बाल, खून, मांस, लार, मल आदि जहरीले एवं हानिकारक तत्त्व भी वरक में पाये जाते हैं।

यद्यपि भारत सरकार ने खाद्य पदार्थ मिलावट रोक कानून 1954 (PFA 2003) के अन्तर्गत वरक को खाद्य पदार्थ के रूप में मान्यता दी गयी है पर उसका नियम है कि वरक में चांदी की शुद्धता 99.9% से अधिक होनी चाहिये। जबकि उसमें शुद्धता का प्रतिशत 99.9% से कम पाया गया है। दूसरी ओर जब वरक पर विभिन्न प्रयोग किये गये तो पाया गया कि एल्युमिनियम के भी वरक बनते हैं जो कि प्रत्यक्षत: स्वास्थ्य के लिये जहर है। अशुद्ध वरक में मेंगनीज, तांबा, नीकल, सीसा, क्रोमियम आदि हानिकारक तत्त्व पाये गये हैं, जो कि केंसर, टी.बी., पथरी (stone) आदि घातक बीमारियों के कारण हैं।

एक मीठा षडयंत्र-

वरक अर्थात् आर्य संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने का एक षडयंत्र। भारतीय संस्कृति का प्राण अहिंसा है और त्याग उसकी आत्मा है।

भारत को विश्वगुरू कहा जाता है क्योंकि आर्य संस्कृति में विश्व शान्ति, परस्पर सौहार्द्र और सद्भाव के बीज समाये हुए हैं।

इस संस्कृति का आधार है- सत्साहित्य। इस सभ्यता के रक्षक हैं-पंचमहाव्रतधारी श्रमण भगवंत और इस धर्म की शक्ति है-अहिंसा। जैनत्व एवं अहिंसा की पवित्र संस्कृति को हिंसा के रक्त से अपवित्र करने का वरक नामक महाभियान चल रहा है।

अहिंसा की मजबूत प्राचीर को गिराने का उपक्रम है- वरक। छोटे से वरक के माध्यम से विषैले तत्त्व भीतर में जाकर उतनी ही बडी भूमिका निभा सकते हैं जितनी कि बडी नाव को डूबाने में एक छोटा छिद्र निभाता है।

अत्यन्त भावुकता काम की नहीं-

वरक का उपयोग भोग स्थानों पर ही नहीं, धर्म स्थानों पर भी प्रचुरता से हो रहा है। जिनालयों में प्रभु आंगी में एवं प्रतिमा की सजावट में भक्त वर्ग वरक का उपयोग करता है जो कि सर्वथा अनुचित है।

अहिंसा के उपदेष्टा भगवान की पूजा में इतने भावुक न बने कि पूजा का विवेक और औचित्य ही भूल जाये। जब मंदिर में बाजार के अभक्ष्य पदार्थों का उपयोग निषिद्ध है तब घोर हिंसा जनक वरक कैसे स्वीकार्य हो सकता है? प्रभु-प्रतिमा से टपकती वीतरागता, सौम्यता और विशुद्धता जब अतीव सघन तथा विशिष्ट है, तब वरक की आवश्यकता क्या हैं?

एक निवेदन- वरक में न तो स्वाद है, न शक्ति। यह तो एक मात्र सौन्दर्यीकरण का हेतु है। इण्डियन एयर लाइन्स ने स्वस्तरीय कार्यवाही करते हुए अपनी विमान सेवा में वरक के उपयोग पर रोक लगा दी है।

यद्यपि वर्तमान में वरक बनाने के यंत्र भी बन चुके हैं पर प्रश्न यह है कि उनसे बनने वाले वरक को कैसे पहचाना जाये क्योंकि ऐसा कोई भी चिन्ह वरक-पेकेट पर नहीं होता

जिससे यह ज्ञात हो जाय कि यह यंत्र द्वारा निर्मित है और यह किताब में कूटा गया है। अत: शाकाहारी एवं मांसाहारी वरक की पहचान का कोई फॉर्मूला जब तक हाथ न लगे, तब तक वरक का सर्वथा त्याग ही उपयुक्त है क्योंकि आंगी की चमक और मिठाई, फल आदि की सुन्दरता न बढेगी तो चलेगा पर किसी भी तरीके से हमारे शरीर में मांस के अंश प्रविष्ट न हो तथा हमारे किसी भी व्यवहार द्वारा पंचेन्द्रिय जीव-हिंसा की अनुमोदना न हो, इतनी जागरूकता एवं संकल्प शक्ति तो जरूरी है ही।

यदि आप अहिंसक, शाकाहारी एवं आर्य कहलाना पसंद करते हैं तो वरक का त्याग करे तथा स्वधर्मियों, दुकानदारों, परिचितों, स्वजनों एवं परिजनों से निवेदन करे कि वरक का उपयोग न करें तथा घर में भी उसका वर्जन करते हुए प्रचारक की भूमिका निभाये।

संस्कृत के चोर अंग्रेज

मनु = मैन
पितर = फादर
मातर = मदर
भ्रातर =ब्रदर
स्वसा = सिस्टर
दुहितर = डाटर
सुनु = सन
विधवा = विडव
अहम् = आई एम
मूष = माउस
ऋत = राइट
स्वेद = स्वेट (पसीना)
अंतर = अंडर (नीचे, भीतर)
द्यौपितर = जुपिटर (आकाश, बृहष्पति)
पशुचर = पाश्चर (चरवाहा)
दशमलव = डेसिमल
ज्यामिति = ज्योमेट्री
पथ = पाथ (रास्ता)
नाम = नेम

वमन > Vomity = उल्टी करना
द्वार > डोर Door
हृत > हार्ट Heart
द्वि> Two
त्रि = Three
पञ्च > Penta > five
सप्त > hept > seven
अष्ट > oct > eight
नव > non > nine
दश > deca > ten
दन्त > dent
उष्ट्र > ostrich
गौ > cow
गम् > go
स्था > stay

संस्कृत ही मूल भाषा है, अन्य सभी उसके अपभ्रंश एवं विकृत रूप हैं।

तत्त्वावबोध

13

चतुर्भंगी का चमत्कार

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

८८ गति-दिशा

1 गति नहीं, दिशा नहीं- जाति भव्य जीवों की

2 गति और दिशा, दोनों हैं- सम्यक्त्वी मनुष्य की

3 गति है पर दिशा नहीं- वायु की

4 गति नहीं पर दिशा है- वृक्ष की

८९ दो भाई और दीक्षा

1 छोटे बडे, दोनों भाईयों ने दीक्षा ली- राम और भरत

2 छोटे भाई ने दीक्षा ली, बडे ने नहीं ली- महावीर और नंदीवर्धन

3 बडे भाई ने दीक्षा ली, छोटे ने नहीं ली- बलभद्र और श्रीकृष्ण

4 दोनों भाईयों ने दीक्षा नहीं ली- युगबाहु और मणिरथ

९० पति-पत्नी और दीक्षा

1 पति-पत्नी, दोनों ने दीक्षा ली- ऋषभदत्त और देवानंदा

2 पति ने दीक्षा ली पर पत्नी ने नहीं ली- महावीर स्वामी और यशोदा

3 पति ने दीक्षा नहीं ली पर पत्नी ने ली- रावण और मंदोदरी

4 पति और पत्नी, दोनों ने दीक्षा नहीं ली- धृतराष्ट्र और गांधारी

९१ माता-पिता और दीक्षा

1 मेरे माता-पिता, दोनों ने दीक्षा ली- अरणिक मुनि

2 मेरी माता ने दीक्षा ली पर पिता ने नहीं ली- अभयकुमार

3 मेरे पिता ने दीक्षा ली पर माता ने नहीं ली- शय्यंभवसूरि के पुत्र मनक मुनि

4 मेरे माता-पिता, दोनों ने दीक्षा नहीं ली- भगवान आदिनाथ

९२ बहिन और दीक्षा

1 दोनों बहिनों ने दीक्षा ली- ब्राह्मी और सुन्दरी

2 दोनों बहिनों ने दीक्षा नहीं ली- जयसुन्दरी एवं भुवनसुन्दरी

3 बडी बहिन ने दीक्षा ली, छोटी ने नहीं ली- मृगावती और चेलणा

4 छोटी बहिन ने दीक्षा ली, बडी ने नहीं ली- सुज्येष्ठा और ज्येष्ठा

९३. सासु-बहु-दीक्षा

1 सासु-बहु, दोनों ने दीक्षा ली- सीता और कौशल्या

2 सासु-बहु, दोनों ने दीक्षा नहीं ली- मरूदेवा और सुनन्दा-सुमंगला

3 सासु ने दीक्षा ली, बहु ने नहीं ली- सीता और उनकी पुत्रवधु

4 बहु ने दीक्षा ली, सासु ने नहीं ली- सीता और कैकेयी

९४. संसार और ममता

1 मैंने संसार और ममत्व, दोनों को छोडा- तीर्थंकर, गणधर आदि

2 मैंने संसार छोडा पर ममत्व नहीं छोडा- मरीचि

3 मैंने संसार नहीं छोडा पर ममत्व छोडा- मरूदेवी माता, भरत चक्री (दीक्षा पूर्व)

4 मैंने संसार और ममत्व, दोनों को नहीं छोडा- त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ वासुदेव

९५. अहंकार और पश्चात्ताप

1 मैंने अहंकार किया, पश्चात्ताप भी किया- दशार्णभद्र, स्थूलिभद्र

2 मैंने अहंकार किया पर पश्चात्ताप नहीं किया- सुभूम चक्री, मरीचि

3 मैने अहंकार नहीं किया पर पश्चात्ताप किया- अतिमुक्तक

4 मैने अहंकार और पश्चात्ताप, दोनों नहीं किये- तीर्थंकर

दीपावली पूजन

श्री जैन शारदा-महालक्ष्मी पूजन दीपावली पूजन-विधि

1. स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर पूजा करें।
2. पूजन के उपकरण-धूप बत्ती, धूपदान, अखण्ड दीपक, पान, मौली, पंचामृत-दही, दूध, घी, मिश्री और केसर मिलाकर कलश तैयार कर लें। अक्षत, सुपारी और केसर आदि सभी एक थाली में संचय करके रख लें।
3. दवात को मांजकर नई स्याही भरें।
4. नई पेन/कलम लें।
5. पूजन करते समय भगवान महावीर स्वामी, श्री गौतम स्वामी, शारदा और लक्ष्मी का चित्र बाजोट पर पूर्व या उत्तर में स्थापित करें।
6. शुभ मुहूर्त्त में नई बहियों, कलम, दवात को किसी चौकी या पाटे पर पूर्व या उत्तर की ओर स्थापित करें।
7. इस पाटे के दाहिने ओर घी का दीपक और बायीं ओर धूप या अगरबत्ती रखें।
8. पूजन करने वालों के दाहिने हाथ की ओर दवात, नई कलम रखे। बहियों को तीन नवकार गिनकर लच्छा बांधे।
9. पूजन करने वालों को तीन नवकार गिनते हुए दाहिने हाथ की कलाई में मौली बांधें। फिर एक नवकार पढ़ते हुए कलम के भी मौली बांधें।
10. दीपावली पर्व पर उपवास, आयंबिल, एकासना आदि तप करें।
11. आतिशबाजी आदि का उपयोग नहीं करें। इससे महान् कर्मबंधन होता है। अतः यह सर्वथा त्याज्य है।
12. कुमारिका द्वारा सर्वपूजकों के कपाल पर कुंकुम का तिलक कर अक्षत लगावें।

नई बही के प्रथम पाने में सर्वप्रथम **ॐ अर्हम् नमः** लिखें। फिर एक से लेकर नौ, 9 आकारों में एक **श्री** से प्रारम्भ कर 9 **श्री** तक लिखें, इससे **श्री** का शिखर बन जाएगा। उसके नीचे रोली (कुंकुम) का 卐 (स्वस्तिक) बनायें, फिर उसके आजू-बाजू में **शुभ लाभ** इस प्रकार लिखें -

।।ॐ अर्हम् नमः।।

श्री

शुभ श्री श्री लाभ

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

卐श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री卐

卐

फिर बही में लिखना प्रारम्भ करें :-

8	3	4
1	5	9
6	7	2

।।श्री महावीर स्वामिने नमः।।

।।श्री गुरू गौतम स्वामिने नमः।।

।।श्री जिनदत्त-चन्द्र-कुशल-चन्द्र गुरूभ्यो नमः।।

।।श्री सद्गुरूभ्यो नमः।।

।।श्री सरस्वत्यै नमः।।

श्री गुरूगौतमस्वामीजी जैसी लब्धि हो
श्री केसरियाजी जैसा भरपूर भंडार हो
श्री भरत चक्रवर्ती जैसी ऋद्धि हो
श्री बाहुबली जी जैसा बल हो
श्री अभयकुमार जी जैसी बुद्धि हो
श्री कयवन्नाजी सेठ जैसा सौभाग्य हो
श्री धन्ना शालिभद्रजी जैसी सम्पत्ति हो
श्री श्रेयांसकुमारजी जैसी दानवृत्ति हो
श्री जिनशासन की प्रभावना हो।

श्री वीर सं. 2540 श्री विक्रम सं. 2071 मिति कार्तिक वदि 30 गुरूवार तारीख 23-10-2014 को श्री महालक्ष्मी देवी का पूजन शुभ मुहूर्त्त में किया।

बाद में स्वस्तिक पर नागरबेल का पान, लौंग, सुपारी, इलायची, रूपा नाणा आदि रखें। फिर अखंड जलधारा बही के चारों ओर देकर पू. गुरूदेव का अभिमंत्रित वासक्षेप, अक्षत, पुष्प, कुसुमांजलि हाथ में लेकर चोपड़ा के ऊपर कुसुमांजलि करें।

श्री शारदा (सरस्वती) पूजन-विधि

निम्नलिखित श्लोक एवं तत्पश्चात् मंत्र बोलें -

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।।

मंत्र- ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्ध भरते मध्यखण्डे भारत देशे ..... नगरे ममगृहे श्री शारदादेवी आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

आह्वान-ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

स्थापना- ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

संनिधान- ॐ श्री शारदा देवी, मम सानिध्यं कुरू कुरू स्वाहा, अत्र पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

यह कहकर हाथ में ली हुई कुसुमांजलि चढ़ावें।

इस प्रकार स्तुति करने के पश्चात् श्री शारदा देवी की पूजन करें :-

पंचामृत पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पंचामृतं समर्पयामि स्वाहा।

(पंचामृत का छांटणा करें)

जल पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै जलं समर्पयामि स्वाहा। (जल छांटणा करें)

चन्दन पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै हंसगामिन्यै लोकालोक-प्रकाशिकायै श्री सरस्वत्यै चन्दनं गन्धं समर्पयामि स्वाहा । (चन्दन के छांटणा करें)

पुष्प पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। (पुष्प चढ़ायें)

धूप पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै धूपं समर्पयामि स्वाहा। (धूप करें)

दीप पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै दीपं समर्पयामि स्वाहा। (दीप करें)

अक्षत पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अक्षतं समर्पयामि स्वाहा। (अक्षत चढ़ायें)

नैवेद्य पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। (नैवेद्य चढ़ायें)

फल पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै फलं समर्पयामि स्वाहा। (फल चढ़ायें)

अर्घ्य पूजा- ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अर्घ्यं सर्वोपचारान् स्वाहा। (बाकी सब वस्तु चढ़ायें)

इस प्रकार द्रव्य पूजन करने के पश्चात् क्षमापना करें, बाद में श्री सरस्वती स्तोत्र का पाठ करें।

श्री सरस्वती स्तोत्र

तर्ज-हे नाथ तेरे चरणों...

हे शारदे मां हे शारदे मां।
हमें तार दे मां हे शारदे मां ।।
है रूप तेरा उज्ज्वल समुज्ज्वल।
सावन-सा रिमझिम गंगा-सा निर्मल।
जीवन का उपवन संवार दे मां,
हे शारदे मां.....।।१।।
अम्बर से विस्तृत चंदा-सी शीतल।
तुमसे प्रकाशित है सारा भूतल।
अमृत की बूंदें दो-चार दे मां,
हे शारदे मां.....।।२।।
मूरख भी पंडित गूंगा भी वक्ता।
तेरी कृपा से क्या हो न सकता।
अपनी कृपा को विस्तार दे मां,
हे शारदे मां.....।।३।।
साधु भी श्रावक भी तुमको ही ध्यावे।
तेरी अमी से निज भान पावे।
मणिप्रभ को वात्सल्य की धार दे मां,
हे शारदे मां.....।।४।।

उपर्युक्त स्तोत्र बोलने के बाद एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारें।

श्री सरस्वती माता की आरती

जय जय आरती माता तुम्हारी।
आलोकित हो बुद्धि हमारी।।1।।
कर में वीणा पुस्तक सोहे।
धवल कमल सिंहासन मोहे।।2।।
तुझ चरणों में आरती अर्पण।
निर्मल बुद्धि देना हर मन।।3।।
मात सरस्वती के गुण गाउँ।
'मणि' चिन्तामणि विद्या पाउँ।।4।।

फिर इस अष्टक का पाठ करें -

श्री गुरु गौतम स्वामी का अष्टक

अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।दोहा।।
त्रिपदी प्राप्त भगवंत से, द्वादश अंग विचार।
रचना क्षण इक में करे, गुरु गौतम जयकार।।1।।
दीक्षा दी जिसको उसे, केवल हुआ श्रीकार।
बोधिदान में कुशल वर, गुरू गौतम जयकार।।2।।
निज लब्धि से ही चढ़े, अष्टापद सुखकार।
बोधे जृंभक देव को, गुरु गौतम जयकार।।3।।
पन्द्रहसौ तापस तपे, दे प्रतिबोध उदार।
एक पात्र से पारणा, गुरु गौतम जयकार।।4।।
वीर प्रभु निर्वाण सुन, मंथन मनन अपार।
पाई केवल संपदा, गुरु गौतम जयकार।।5।।
जो चाहो सुख संपदा, इष्ट सिद्धि संसार।
सुबह शाम नित नित करो, गुरु गौतम जयकार।।6।।
चरणों में मैं नित करूँ, वंदन विधि अनुसार।
इष्ट सिद्धि वांछित फले, गुरु गौतम जयकार।।7।।
गौतम स्वामी को नमो, जाप करो हर बार।
'मणि' मन वंदन भाव से, गुरु गौतम जयकार।।8।।

उपर्युक्त गौतम अष्टक बोलने के बाद पूर्व या उत्तर दिशा सम्मुख होकर धूप-दीप करके एकाग्रचित्त से निम्नलिखित सरस्वती मंत्र की एक माला गिनें।

श्री सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं सरस्वत्यै नमः

।।श्री महालक्ष्मी पूजन-विधि।।

श्री महालक्ष्मीजी मूर्ति, सिक्का, सोना, चांदी इत्यादि पूजन के लिए चांदी की थाली में बहुमान से स्थापित की जानी चाहिए।

मन्त्र और विधि

आह्वान- दो हाथ जोड़कर अनामिका अंगुली के मूल-पर्व को अंगूठे से जोड़ने से आह्वान मुद्रा होती है। इस मुद्रा से यह मंत्र बोलकर आह्वान करें-

1. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.... ....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभांडागार-भरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

स्थापना- दोनों हथेलियों को नीचे की ओर उल्टा करने से स्थापन मुद्रा होती है। इस मुद्रा में यह मंत्र बोलें-

2. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.... .....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार-भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र पूजने तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।
3. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.... .....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार-भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अब महालक्ष्मी देवी का पूजन करें :

1. **जल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि ! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु जलं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
2. **गंध पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु, गंधं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
3. **पुष्प पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।
4. **धूप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
5. **दीप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
6. **अक्षत पूजा**- ॐ आँ क्रौ ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
7. **नैवेद्य पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।
8. **फल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु फलानि गृहाण गृहाण स्वाहा।।
9. **वस्त्र पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा।।

हाथ जोड कर बोलें-

नीर-गन्धाक्षतै र्पुष्पै-नैंवेद्यैर्धूप-दीपकै:।
फलैरर्घ्यं च अर्चामि, सर्वकार्यसुसिद्धये।।

पुष्पांजलि (समर्पित करना)

शान्ति: शान्तिकर: स्वामी, शान्तिधारां प्रवर्षति।
सर्व-लोकस्य शान्त्यर्थं, शान्तिधारां करोम्यहम्।।

जाति-चम्पकमालाद्यै - र्मोगरैः पारिजातकैः।
यजमानस्य सौख्यार्थे, सर्वविघ्नोपशान्तये।।

इस प्रकार द्रव्य पूजा के पश्चात् एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारनी चाहिए।

महालक्ष्मी माता की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, हो देवी जय लक्ष्मी माता।
संकट मेरे हर दो, झोली मेरी भर दो,
पाउँ सुखशाता ।।टेर।।
रखवाली तुम जिन शासन की, संघ सकल ध्यावे।
पहली आरती सिद्धि, दूजी सुख पावे।।1।।
छम-छम पायल घुंघरूँ बाजे, स्वर्ण कमल रचना।
पंखुड़ी शोक निवारे, घर बंधे पलना।।2।।
सूरि मंत्र है मंत्र शिरोमणि, महालक्ष्मी सेवा।
आरती श्रद्धा भावे, पावत शिव मेवा।।3।।
महर करो हे लक्ष्मी माता, आशिष दुःख हरे।
घर आंगन में पधारो, भक्त पुकार करे।।4।।
आरती लक्ष्मी वंदन पूजन, ऋद्धि सिद्धि आवे।
मणिमय संपद् पावे, तन मन हरसावे।।5।।

इसके बाद मंत्र बोले :-

कर्पूरपूरेण मनोहरेण, सुवर्णपात्रान्तर-संस्थितेन।
प्रदीप्तभासा सह संगमेन, नीरांजनं ते जगदम्ब! कुर्वे।
।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री महालक्ष्म्यै नमः ।।

तत्पश्चात् अक्षत और फूल लेकर कुबेर का पूजन करके कलश के ऊपर चढ़ावें।

आह्वामि देव! त्वाम् इहा याहि कृपां कुरु।
कोष-वर्द्धये नित्यं, त्वम् परिपक्ष सुरेश्वर।।
धनाध्यक्षाय देवाय, नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय, कुबेराय महात्मने।।

फिर काँटा-बाट हो तो तराजू में स्वस्तिक करके फूल चढ़ावें और काँटें पर नींबू लगावें।

नमस्ते सर्वदेवानां, शांतित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षिभूता जगद्धात्री, निर्मिता विश्वयोनिना।।

पूजन में अज्ञानतावश कोई दोष लगा हो, उसके लिए निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए क्षमायाचना करनी चाहिए।

क्षमायाचना

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।1।।
आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजाऽर्चां नैव जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ।।2।।
अपराधासहस्राणि, क्रियन्ते नित्यशो मया।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।3।।

इन श्लोकों द्वारा क्षमायाचना करें।

इति पूजनविधि

इस प्रकार पूजन करने के बाद अनाथ, अपंग, निराश्रित लोगों को यथाशक्ति द्रव्यादिक का दान करना चाहिए और साधर्मिक भाइयों की यथाशक्ति भक्ति का लाभ लेना चाहिए।

दीपावली के जाप

1. **ॐ ह्रीं श्रीं महावीरस्वामी नाथाय नमः**
   प्रथम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।
2. **ॐ ह्रीं श्री महावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः**
   दूसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।
3. **ॐ ह्रीं श्रीं महावीरस्वामी पारंगताय नमः**
   तीसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।
4. **ॐ ह्रीं श्रीं गौतमस्वामी-केवलज्ञानाय नमः**
   अंतिम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

इस मंत्र की 20 माला सूर्योदय से पहले चौथे प्रहर में फेरनी चाहिये। बाद में मंदिर में दर्शन-चैत्यवंदन एवं लड्डू चढ़ाने आदि की विधि करें। तत्पश्चात् गुरुदेव को वन्दन करना चाहिए तथा उनके मुखारविन्द से सप्त स्मरण व श्री गौतमरास को एकाग्रतापूर्वक श्रवण करना चाहिए।

मुनि श्री मनितप्रभसागरजीम.

पंचांग

NOV. 2014

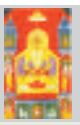
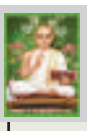

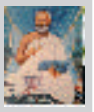

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
30 मिगसर सुदि 9						1 कार्तिक सुदि 9
2 कार्तिक सुदि 10	3 कार्तिक सुदि 11	4 कार्तिक सुदि 12	5 कार्तिक सुदि 13/14	6 कार्तिक सुदि 15	7 मिगसर वदि 1	8 मिगसर वदि 2
9 मिगसर वदि 3	10 मिगसर वदि 4	11 मिगसर वदि 5	12 मिगसर वदि 6	13 मिगसर वदि 7	14 मिगसर वदि 7	15 मिगसर वदि 8
16 मिगसर वदि 9	17 मिगसर वदि 10	18 मिगसर वदि 11	19 मिगसर वदि 12	20 मिगसर वदि 13	21 मिगसर वदि 14	22 मिगसर वदि 30
23 मिगसर सुदि 1	24 मिगसर सुदि 2	25 मिगसर सुदि 3	26 मिगसर सुदि 4	27 मिगसर सुदि 5/6	28 मिगसर सुदि 7	29 मिगसर सुदि 8

पर्व दिवस		
	06.11.2014 चौमासी प्रतिक्रमण	कार्तिक सुदि 14 का क्षय
	09.11.14 रोहिणी आराधना	मिगसर वदि 7 की वृद्धि
	21.11.2014 पाक्षिक प्रतिक्रमण	मिगसर सुदि 6 का क्षय

श्री अरनाथ केवलज्ञान कल्याणक	कार्तिक सुदि 12	श्री सुविधिनाथ दीक्षा कल्याणक	मिगसर वदि 6
आचार्य श्री जिनपतिसूरि आचार्य पदारोहण	कार्तिक सुदि 13(1223)	आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरि पुण्यतिथि	मिगसर वदि 7(2042)
श्री जिनसागरसूरि जन्म दिवस	कार्तिक सुदि 14(1652)	जहाज मंदिर आचार्य श्री जिनभद्रसूरि पुण्यतिथि	मिगसर वदि 9(1514)
श्री सिद्धाचल महातीर्थ यात्रा	कार्तिक पूर्णिमा	श्री महावीरस्वामी दीक्षा कल्याणक	मिगसर वदि 10
श्री हेमचन्द्राचार्य जन्म दिवस	कार्तिक पूर्णिमा(1145)	श्री पदमप्रभस्वामी मोक्ष कल्याणक	मिगसर वदि 11
दादा श्री जिनकुशलसूरि जन्म दिवस सिवाना	मिगसर वदि 3(1337)	आचार्य श्री जिनयशसूरि पुण्यतिथि	मिगसर सुदि 3(1970)
श्री सुविधिनाथ जन्म कल्याणक	मिगसर वदि 5	कलिकाल केवली श्री जिनचन्द्रसूरि जन्म दिवस	मिगसर सुदि 4(1324)
		आचार्य जिनहरिसागरसूरि जन्म दिवस	मिगसर सुदि 7(1949)

समाचार दर्शन

इचलकरंजी में पंचाह्निका महोत्सव

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया गुरुवर्या बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म0.ण की परम पावन निश्रा में चातुर्मास में हुई मासक्षमण, सिद्धि तप, वीशस्थानक तप आदि विविध तपाराधना के उपलक्ष्य में पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया।

ता. 2 सितम्बर 2014 को मणिधारी दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। गुणानुवाद के बाद दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। ता. 3 से 7 सितम्बर तक पंचाह्निका महोत्सव आयोजित हुआ। ता. 3 को अठारह अभिषेक, 4 को महावीर स्वामी षट्कल्याणक पूजा, 5 को श्री पंचपरमेष्ठी पूजा पढाई गई। ता. 6 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। दोपहर में श्री अर्हद् अभिषेक महापूजन का अनूठा आयोजन किया गया। ता. 7 को तपस्वियों का बहुमान एवं दोपहर में श्री वर्धमान शक्रस्तव महापूजन पढाया गया। इन दोनों महापूजनों को शास्त्रीय विशिष्ट रागों में पढाने हेतु सुप्रसिद्ध श्रावकवर्य साधक प्रवर श्री विमलभाई शाह कडी वाले मुंबई से पधारे थे।

संगीतकार विनीत गेमावत की प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया।

चौथे दादा गुरुदेव को याद किया

अकबर प्रतिबोधक चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की 401वीं पुण्यतिथि पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के सानिध्य में ता. 10 सितम्बर 2014 को मनाई गई। इस अवसर पर पूज्य उपाध्यायश्री ने, पूज्य मनितप्रभसागरजी म. एवं पू. मेहुलप्रभसागरजी म. ने गुरुदेव के गुणगान किये। उनके दिव्य तेजोमयी व्यक्तित्व की चर्चा की। इस अवसर पर रमेश लूंकड, संपतराज संखलेचा, बाबुलाल मालू ने भी गुणगान किये। दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

इचलकरंजी में 45 आगम वांचना

पर्वाधिराज पर्युषण आराधना के पश्चात् 45 आगमों की वांचना श्रृंखला चल रही है। पूज्य गुरुदेव उपाध्यायश्री आगमों की विशिष्ट व्याख्या करते हुए रहस्य समझाते हैं। प्रवचन श्रवण के लिये पर्युषण के पश्चात् भी लोग बडी संख्या में दौडे आते हैं। ऐसा आभास ही नहीं होता कि पर्युषण पूर्ण हो गये हैं।

बाहर से विनंती करने हेतु विभिन्न संघों का आगमन हो रहा है। प्रतिदिन शताधिक अतिथिगणों का नियमित आगमन हो रहा है। इचलकरंजी संघ उनका तत्परता के साथ बहुमान पूर्वक स्वागत कर रहा है।

नवपदजी की ओली का प्रारंभ 30 सितम्बर से हुआ है। जिसका लाभ श्री दीपचंदजी तलेसरा परिवार ने लिया है।

स्वर्णिम चातुमास
एक नजर में...

गज मंदिर केशरियाजी की बैठक संपन्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 13 सितम्बर 2014 को श्री जैन श्वेताम्बर कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट, केशरियाजी की संचालन समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बाबुलालजी बोहरा ने की। ट्रस्ट के महामंत्री श्री गजेन्द्रजी भंसाली ने गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गज मंदिर का कार्य प्रायः पूर्ण होने को है। अठारह हाथियों पर अंबाडी का कार्य चल रहा है। गज मंदिर के प्रदक्षिणा पथ में बने 25 मंदिरों में पिछवाई का कार्य प्रारंभ होना है। यह पिछवाई चित्रकारी द्वारा बनवाई जायेगी।

गज मंदिर में नीचे दादावाडी परिसर में चारों ओर प्रदक्षिणा पथ में श्री केशरियानाथ परमात्मा के केसरियाजी तीर्थ में प्रकट होने के इतिहास पर आधारित प्रदर्शनी बनाने का निर्णय किया गया। श्री केशरियाजी-अहमदाबाद मुख्य मार्ग पर केशरियाजी से 15 किलोमीटर की दूरी पर खेरवाडा में विहार धाम बनाने का निर्णय किया गया। इसके लिये आवश्यक भूखण्ड क्रय किया जा चुका है। साथ ही गज मंदिर परिसर के पास ही पूर्व में लिये गये विशाल भूखण्ड के पास भविष्य की योजनाओं के लिये प्राप्त हो रहे विशाल भूखण्ड को खरीदने का तय किया गया।

गज मंदिर की आवास, भोजन आदि व्यवस्थाओं पर पूर्ण रूप से संतोष व्यक्त किया गया। गज मंदिर बनने के बाद केशरियाजी पधारने वाले यात्रियों की संख्या में शत गुणा अभिवृद्धि हुई है। इसके साथ ही देवीकोट जिन मंदिर जीर्णोद्धार, बिजयनगर पार्श्वनाथ मंदिर, चित्तौड पार्श्वनाथ मंदिर में 5-5 लाख रूपये अर्पण करने का प्रस्ताव पारित किया गया।

श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट, पालीताना की बैठक

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष संघवी श्री विजयराजजी डोसी की अध्यक्षता में ता. 13 सितम्बर 2014 को इचलकरंजी नगर में मणिधारी भवन में श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट की मीटींग संपन्न हुई। वार्षिक लेखा जोखा पारित किया गया।

मुख्य द्वार पर बने उपाश्रय के ऊपर एक हॉल ज्ञान मंदिर के रूप में बनाने का निर्णय किया गया। महामंत्री बाबुलाल लूणिया ने वहाँ पर्युषण महापर्व पर हुई आराधना और वहाँ चल रहे वैयावच्च के कार्यों की जानकारी दी।

भिवंडी समाचार

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में मणिधारी दादावाडी भवन इचलकरंजी में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ भिवंडी ट्रस्ट मंडल की मीटिंग 20-09-14 शनिवार को संपन्न हुई। संघ की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए गुरुदेव की प्रेरणा से 2 वर्ष के लिये श्री बाबुलालजी नेमीचंदजी छाजेड (एन.जे.) व श्री सुखराजजी धनराजजी संकलेचा सी.टी.एम. संरक्षक नियुक्त करते हुए कार्यकारिणी में सम्मिलित किया गया।

पूज्यश्री के इस आदेश से सकल संघ में आनंद का वातावरण छा गया। -सी.एल.जैन भिवंडी

कुशल वाटिका की मीटींग संपन्न

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से संस्थापित श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान, कुशल वाटिका बाडमेर की बैठक पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 14 सितम्बर 2014 को संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड ने की। बैठक में बडी संख्या में ट्रस्टी उपस्थित थे।

संस्थान के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड ने बताया कि कुशल वाटिका में दर्शनार्थियों की संख्या लगातार बढ रही है। आवास, भोजन आदि की व्यवस्थाओं से तीर्थ की प्रसिद्धि लगातार बढ रही है। हर शनिवार को एक हजार से अधिक यात्रियों का आगमन होता है। पर्युषण महापर्व के दिनों में तीन हजार लोगों का प्रतिदिन आगमन हुआ।

मूलनायक परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी की रजत-स्वर्ण-रत्न जड़ित भव्य आंगी बनाई गई। जिसकी अपनी अनूठी आभा से वातावरण दैदीप्यमान हो उठा।

महामंत्री मांगीलाल मालू ने बताया कि जिन मंदिर का कार्य पूर्ण हो चुका है। मंदिर के बाहर के परिसर में मकराने की फर्श बन चुकी है। जिन मंदिर में रत्नमय-गलीचे का कार्य पूर्ण हो चुका है। दादावाडी व अन्य मंदिरों में गलीचे का ऑर्डर दिया जा चुका है।

दादा गुरुदेव की 52 फीट 4 इंच की विशाल प्रतिमा बनाने हेतु विचार विमर्श किया गया। निर्णय किया गया कि प्रतिमा पाषाण से ही निर्मित की जायेगी। इसके लिये कोटेशन मंगाये गये हैं। चल रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा की गई। छात्रावास का कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है।

अगले सत्र से छात्रावास का विधिवत् प्रारंभ कर दिया जायेगा। इस छात्रावास में पांचवीं कक्षा और इससे ऊपर के छात्रों को लिया जायेगा। प्राइमरी व मिडिल स्कूल का कार्य प्रशंसनीय चल रहा है। अभी 900 से अधिक छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आगे की योजनाओं के अन्तर्गत भक्ति आश्रम की योजना को कार्यान्वित करने का निश्चय किया गया।

तिरूपुर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 26 जनवरी को

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि मुनि मंडल की पावन निश्रा में तिरूपुर (तमिलनाडु) में श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा माघ सुदि 7 सोमवार ता. 26 जनवरी 2015 को निश्चित की गई है।

तिरूपुर से श्री पार्श्व कुशल जैन सेवा समाज के तत्वावधान में बने इस मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा की विनंती करने एवं मुहूर्त्त प्राप्त करने के लिये तिरूपुर संघ ता. 28 सितम्बर को पूज्यश्री की सेवा में इचलकरंजी पहुँचा। पूज्यश्री ने उनकी विनंती स्वीकार कर 26 जनवरी का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त झेलने का लाभ समाज के अध्यक्ष श्री रमेशजी संखलेचा ने प्राप्त किया। पूजनीया साध्वीश्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से इस मंदिर दादावाडी का निर्माण शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण के मार्गदर्शन में पूर्ण हुआ है।

कोयम्बतूर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 2 फरवरी को

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में कोयम्बतूर नगर में नवनिर्मित श्री स्तंभन पार्श्वनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा माघ सुदि 14 ता. 2 फरवरी 2015 को संपन्न होगी। इस मंदिर दादावाडी में परमात्मा स्तंभन पार्श्वनाथ परमात्मा की 51 इंच की प्रतिमा के अलावा दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की 41 इंची तथा नाकोडा भैरव, पद्मावती, अंबिकादेवी एवं सरस्वती देवी की 31 इंची प्रतिमाऐं बिराजमान होगी।

इस मंदिर दादावाडी का संपूर्ण निर्माण स्वद्रव्य से मूलत: फलोदी वर्तमान में कोयम्बतूर श्री विजयचंदजी झाबक सौ. पारसमणि देवी पुत्र कुशल झाबक परिवार की ओर से किया गया है। उन्होंने सपरिवार इचलकरंजी पहुँच कर वहाँ बिराजमान पूज्यश्री से प्रतिष्ठा कराने व शुभ मुहूर्त फरमाने की विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने 2 फरवरी को शुभ मुहूर्त प्रदान किया।

चेन्नई में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 26 अप्रेल को

चेन्नई नगर की धन्य धरा पर श्री धर्मनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में ता. 26 अप्रेल 2015 को अत्यन्त उल्लास के साथ संपन्न होगी।

चेन्नई में श्री धर्मनाथ परमात्मा से सुशोभित का यह मंदिर सबसे ज्यादा पूजे जाने वाले मंदिरों में गिना जाता है। इसका निर्माण पूजनीया प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. द्वारा स्थापित श्री जिनदत्तसूरि मंडल द्वारा करवाया गया था। अभी उस मंदिर का पूरा जीर्णोद्धार करवाया जा रहा है। मूलनायक परमात्मा का उत्थापन नहीं करवाया गया है। नीचे अभिनव गर्भगृह का निर्माण किया गया है जिसमें परमात्मा धर्मनाथ प्रभु, दादा गुरुदेव आदि की प्रतिमाऐं बिराजमान की जायेगी।

प्रतिष्ठा की विनंती व मुहूर्त्त प्राप्त करने के लिये श्री जिनदत्तसूरि मंडल इचलकरंजी में बिराजमान पूज्यश्री की सेवा में पहुँचा। और अंजनशलाका प्रतिष्ठा चातुर्मास आदि की भावभरी विनंती की। अंजनशलाका प्रतिष्ठा की विनंती स्वीकार करते हुए वैशाख सुदि 8 ता. 26 अप्रेल 2015 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। सकल संघ में आनंद छा गया।

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।
निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार
संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

कन्याकुमारी में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 27 फरवरी को

देश के दक्षिणी किनारे का सुप्रसिद्ध पर्यटन स्थल कन्याकुमारी में लम्बे समय से जिन मंदिर बनाने की चर्चा चल रही थी। यहाँ भ्रमण आदि के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 6 लाख से अधिक जैन बंधुओं का आगमन होता है। परन्तु जैन मंदिर नहीं होने के कारण वे परमात्म दर्शन से वंचित रहते थे। इस कारण यहाँ जिन मंदिर का निर्माण अत्यन्त जरूरी था। इस कार्य को हाथ में लिया चेन्नई निवासी श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने! वहाँ भूखण्ड प्राप्त करने के प्रयत्न करना प्रारंभ किया।

तभी पता चला कि वहाँ एक भूखण्ड मदुराई निवासी श्री बगदावरमलजी के पास उपलब्ध है। उनसे संपर्क किया गया। उन्होंने भी मदुराई संघ के साथ मिल कर जिन मंदिर आदि निर्माण के लक्ष्य से ही यह भूखण्ड कुछ वर्षों पहले खरीदा था।

उन्होंने यह विशाल भूखण्ड श्री जैन तीर्थ संस्थान रामदेवरा ट्रस्ट को सुपुर्द कर दिया। संस्थान के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने कडी मेहनत करके वहाँ जिनमंदिर निर्माण करने की सरकारी अनुमति प्राप्त की। ता. 14 मार्च 2014 को खात मुहूर्त्त व शिलान्यास का शुभ मुहूर्त्त हुआ। सुप्रसिद्ध सोमपुरा विनोद शर्मा ने सुन्दर मानचित्र तैयार किया। बहुत ही कम समय में श्री महावीर स्वामी जिन मंदिर, श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी एवं श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमंदिर का निर्माण कार्य पूर्णाहुति की ओर अग्रसर है। धर्मशाला, भोजनशाला, उपाश्रय, प्याऊ आदि का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।

संस्थान द्वारा इस मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराने हेतु पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. से भावभरी विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने फाल्गुन सुदि 7 ता. 27 फरवरी 2015 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। समारोह का प्रारंभ 24 फरवरी से होगा। ता. 26 फरवरी को शोभायात्रा का आयोजन होगा।

प्रतिष्ठा के इस पावन अवसर पर बाहर से हजारों लोगों के पधारने की संभावना है। प्रतिष्ठा को ऐतिहासिक बनाने के लिये ट्रस्टी श्री शांतिलालजी गुलेच्छा, श्री राजेश गुलेच्छा आदि पूर्ण रूप से जुट गये हैं।

प्रत्याख्यान भाष्य पुस्तक पर Open Book Exam

पू. गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा लिखित प्रत्याख्यान भाष्य विवेचन प्रश्नोत्तरी की पुस्तक पर श्री जैन श्वे. मणिधारी जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी संघ के तत्वावधान में Open Book Exam का आयोजन किया गया है। यह पुस्तक पच्चक्खान के भेद-प्रभेद, स्वरूप, महता, आगार आदि अनेक बिंदुओं का स्पर्श करने वाली उपयोगी पुस्तक है।

प्रश्न पत्र का संयोजन पू. साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा. ने किया है। प्रथम तीन पुरस्कार 5100, 3100 एवं 2100 रुपये के रखे गये हैं। रुपये 300-300 के सात अभिनंदन पुरस्कार और समस्त प्रतियोगियों को सत्कार पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। पुरस्कार प्रायोजक श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़-इचलकरंजी है। एक Set का मूल्य मात्र 50 रुपये रखा गया है। प्राप्त करने हेतु संपर्क करे-

श्री बाबूलालजी मालू - 098503 16237, श्री रमेशजी भंसाली - 094232 78876,
श्री रमेशजी छाजेड़-094232 84725, जहाज मन्दिर-096496 40451, मुकेश प्रजापत-098251 05823

दिल्ली महानगर : वर्षावास के सुखद पल

दिल्ली नगर के चांदनी चौक के अन्तर्गत खरतरगच्छ समाज में परम पूज्या गुरूवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-7 की निश्रा में आराधना, विशिष्ठ आयोजनों के साथ चातुर्मास चल रहा है। प्रति रविवार को अलग-अलग कार्यक्रम द्वारा इतिहास सर्जन हुआ।

दि. 13 जुलाई 2014 को भक्तामर स्तोत्र महानुष्ठान सह नाटिका का आयोजन हुआ। इसमें भक्तामर की रचना धारा नगरी में राजा भोज ने मानतुंगाचार्य को 48 बेड़ियों से बांधकर, ताले लगा कर कारागृह में बंद कर दिया, वहाँ पर मन की पूर्ण एकाग्रता से सर्वात्मना प्रभु चरणों में समर्पित होकर आदिनाथ भगवान की स्तवना करने लगे, सारी बेड़ियॉ स्वत: एक-एक करके टूट गई, ताले खुल गये। राजा भोज आचार्यश्री के चरणों में नत हुए- यह सारा दृश्य बहुत ही सुन्दर रूप से मणिधारी विचक्षण महिला मंडल एवं महिलाएं, बालिकाओं ने प्रस्तुत किया।

इस आकर्षक नाटिका का मार्गदर्शन साध्वी प्रियकल्पनाश्रीजी म. ने दिया। कार्यक्रम के पश्चात् श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छीय हाला संस्थान (रजि.) दिल्ली ब्रांच के सदस्यों द्वारा साधर्मिक वात्सल्य का आयोजन किया गया।

दि. 20 जुलाई 2014 को श्री महाविदेह क्षैत्र की भाव-यात्रा हुयी। साध्वी प्रियकल्पनाश्रीजी म. ने तन्मयता व तादात्म्यता से श्री सीमंधर स्वामी के भाव दर्शन करवाये तब जन समूह की ऑखों से वेदना और हर्ष की अश्रुधारा बह चली। संगीत प्रस्तुति श्री कोलकाता से पधारे अंकितजी चौरसिया ने दी। कार्यक्रम के पश्चात साधार्मिक वात्सल्य का पूज्य पिताजी स्व. श्री नेमीचंदजी छाजेड़ के आशीर्वाद से मातुश्री धाईदेवी, सुशीला राजनजी, पूनम-विनीत जी, काव्य छाजेड़ परिवार, बाड़मेर-दिल्ली वालों ने लिया।

दि. 27 जुलाई 2014 को ''कैसी हो हमारी जीवन शैली'' की अनूठी प्रस्तुति हुई। इसमें बालक-बालिकाओं ने बताया कि वर्तमान में युवा पीढ़ी फैशन, व्यसन, खान-पान में जैन संस्कृति से दूर होती जा रही है। अनंतकाय, अभक्ष्य भोजन, शीतपेय, रात्रिभोजन, साधन-प्रसाधन के उपयोग से हिंसा आदि पहलुओं पर सुन्दर चित्रण किया।

साधर्मिक वात्सल्य का नाम श्री विजयसिंहजी श्रीपाल, सुनील, संजय एवं खजांची परिवार नागौर-दिल्ली वालों ने लिया।

दि. 3 अगस्त 2014 को ''अर्हत अभिषेक महापूजन'' का भव्य कार्यक्रम हुआ। इस महापूजन में विधान हेतु यशवंतजी गुलेच्छा जयपुर से पधारे। भक्ति एवं पूजन में संगीतमय मधुर वातावरण बनाने अंशूलजी वडेरा हैदराबाद से आए। साधर्मिक वात्सल्य का लाभ संघवी मोहनलालजी रुघनाथमलजी सोनवाडिया परिवार माण्डवला चेन्नई ने लिया।

दि. 10 अगस्त 2014 को रक्षाबंधन, जीव-रक्षा, जीवन रक्षा पर विशेष प्रवचन हुआ।

जन्माष्टमी को ''जिन शासन महिमा'' की हृदय स्पर्शी प्रस्तुति हुयी। भगवान महावीर की शासन स्थापना से लेकर अनेक महापुरूषों का जीवन दर्शन, कृष्णमहाराजा की नेमीनाथ भगवान के प्रति अपार श्रद्धा, मोतीशा सेठ, पुणिया श्रावक की गरिमा का विवेचन किया गया। साधर्मिक वात्सल्य का लाभ यमुनापार खरतरगच्छ संघ दिल्ली ने लिया।

इन कार्यक्रमों में खरतरगच्छ समाज के कोषाध्यक्ष हीरालालजी मुसरफ, चार्तुमास समिजि के संयोजक मनीषजी नाहटा एवं समस्त कार्यकर्ताओं का योगदान रहा। बालिकाऐं महक, लब्धि, दिव्या, लिपिका, कीर्ति, टीशा, सलोनी, पायल आदि एवं निधिजी राक्यान, मणिधारी विचक्षण महिला मंडल की अविस्मरणीय सेवाएं रहीं। चातुर्मास प्रारम्भ में अष्ट महासिद्धियां, 48 दिवसीय भक्तामर तप, नवनिधि तप, पार्श्वनाथ परमात्मा के मोक्षकल्याणक पर सामूहिक अट्ठम, अक्षयनिधि, समवसरण तप आदि में आराधकों ने भाग लिया।

पर्युषण महापर्व की आराधना

खरतरगच्छ भवन के प्रांगण में पर्युषण पर्वाराधना में अष्टकर्म निवारण तप व मोक्ष तप हुआ। जन्मवांचन के लिये चौदह स्वप्नावतरण, बोलियां आशातीत रूप से हुई। बालिकाओं द्वारा एक-एक स्वपन का नृत्य, उसकी महिमा का वर्णन हुआ। कोलकता से पर्युषण पर्व की आराधना हेतु आये श्री अरूणजी मुकीम, सिद्धार्थ महाराजा व उनकी पत्नि त्रिशला महाराणी बनी। पुत्र जन्म बधाई पर सिद्धार्थ महाराजा ने प्रियंवदा को उपहार दिया।

संवत्सरी महापर्व के दिन पुरूष वर्ग में पौषध हुये। साध्वी प्रीतियशाश्रीजी म. ने बारासौ मूल सूत्र का वांचन व सारांश बताया। अट्ठाई की तपस्या वालों का बहुमान करने का लाभ निहालचन्दजी चोपड़ा हालावालों ने लिया। सामुहिक चैत्यपरिपाटी चांदनी चौक में स्थित चारों जिनालय में दर्शन विधि की। तप पारणा का लाभ सोहनलालजी हीरालालजी मुसरफ ने लिया।

श्री भक्तामर महापूजन सम्पन्न

पूज्य श्री की पावन निश्रा में ता. 14.9.2014 को भक्तामर महापूजन किया गया। सामूहिक जोड़ों से पूजा में मुख्य यंत्र पर पूजा करने का व स्वामिवात्सल्य का लाभ श्री सोहनलालजी हीरालालजी मुसरफ परिवार ने लिय। पूजा पढ़ाने विधिकारक मनोजकुमारजी बाबूमलजी हरण पधारे। इस अवसर पर पार्श्वमणि तीर्थ का ट्रस्ट मंडल भी आया।

मुमुक्षु सुश्री शिल्पा बालड का अभिनन्दन

पूज्या गुरूवर्याश्री की निश्रा में संयम ग्रहण करने वाली सुश्री शिल्पा मीठालालजी बालड, गढ़ सिवाना-बल्लारी का अभिनन्दन एवं तपस्वियों का बहुमान समारोह दि. 5 सितम्बर 2014 को किया गया। सुश्री शिल्पा का खरतरगच्छ समाज की ओर से अभिनन्दन पत्र द्वारा बहुमान हीरालालजी सुमनजी मुसरफ ने किया। मणिधारी विचक्षण महिला मंडल, हाला संघ, यमुना पार संघ, बाड़मेर संघ, दिल्ली की ओर से भी दीक्षार्थी बहिन का अभिनन्दन किया गया।

पू. गुरूवर्याश्री ने शिल्पा को सम्बोधन करके कहा कि उत्कृष्ट चारित्र पालन करके अपने लक्ष्य को पाना। दीक्षार्थी बहिन ने अपने उद्‌बोधन में संयम की महता बताई। उसने कहा कि यह पू. गुरूवर्याश्री की वैराग्य वाणी का ही सुफल है। मेरी दीक्षा दि. 15 दिसम्बर 2014 को परम पूज्य उपाध्याय भगवंत श्री मणिप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में बल्लारी (कर्नाटक) में आप पधार कर आशीर्वाद प्रदान करें। कार्यक्रम के पश्चात साधार्मिक वात्सल्य का आयोजन घेवरिया परिवार की ओर से हुआ। दोपहर 2 बजे संयम की सांझी रखी गई।

नैत्र, हड्‌डी, नस परीक्षा जांच शिविर

पूज्याश्री की पावन प्रेरणा से पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म. एवं पूज्या प्रवर्तिनी श्री प्रेमश्रीजी म. की पुण्यतिथि निमित्ते दि. 20.9.2014 को नवलकिशोरजी खैरातीलालजी लाल धर्मशाला में आंख, हड्‌डी, नस जांच का कैम्प रखा गया। मंगलाचरण के पश्चात् जैन स्कूल के छोटे बच्चों ने 24 भगवान के नाम व नवकार महामंत्र सुनाया। रहीं। अच्छे डॉक्टर के निर्देशन में यह शिविर हुआ। - मनीष नाहटा, चातुर्मास संयोजक

तिरुपातुर से कृष्णगिरि व सुशीलधाम का श्री पार्श्व जिनदत्त कुशल छःरी पालक संघ का आयोजन

पूजनीया धवल यशस्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्याएं साध्वी श्री मयुरप्रियाश्रीजी म., साध्वी श्री तत्त्वज्ञलताश्रीजी म., साध्वी श्री संयमलताश्रीजी म. की पावन निश्रा में तिरुपातुर में आराधनामय चातुर्मास गतिमान है। तपस्या के कीर्तिमान को देख सकल संघ गद्‌गद् है।

इसी कडी में गुरुभक्त परिवार आयोजित तिरुपातुर नगर से कृष्णगिरि व सुशीलधाम तक का श्री पार्श्व जिनदत्त कुशल छःरी पालक संघ का आयोजन किया जा रहा है। इस उपलक्ष में तिरुपातुर में दि. 09.11.20104 को स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया है। दि. 10.1102014 को बाजते गाजते संघ का प्रयाण होगा। दि. 12.11.2014 को यह संघ कृष्णगिरि पहुंचेगा। जहां महापूजन एवं भक्ति महोत्सव आयोजित होगा। छःरी का पालन करते हुये दि. 16.11.2014 को बेंगलोर स्थित श्री सुशीलधाम में पहुंचकर संघ की पूर्णाहुति होगी। - आर.सुषमा कवाड़

मुंबई में दादा गुरुदेव महापूजन का आयोजन

धर्म नगरी मुंबई में श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में श्री मणिधारी युवा परिषद्, मुंबई द्वारा पू. साध्वीरत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा की शिष्या पू. साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म., साध्वी प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म. की पावन निश्रा में महाचमत्कारी दादा गुरुदेव महापूजन का भव्य आयोजन 17 अगस्त 2014 को मोरारबाग वाडी में किया गया।

इस अवसर पर पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. द्वारा संकलित दादा गुरुदेव की पूजा पुस्तिका का विमोचन सुश्री मंजूजी लोढा, श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ के संस्थापक अध्यक्ष प्रकाशजी कानुगो, अध्यक्ष मांगीलालजी शाह, महामंत्री अमृतलालजी कटारिया सिंघवी, संघवी मुकेश मरडिया आदि द्वारा किया गया।

महापूजन की मुख्य विधि पूज्य गुरुवर्याश्रीजी के द्वारा करवायी गयी। इस महापूजन में 54 जोडों ने हिस्सा लिया। जिन्हें सम्पूर्ण पूजन सामग्री के साथ यंत्र एवं चारों दादा गुरुदेव की सुंदर तस्वीर भेंट की गयी। शहर के कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। गौरतलब है कि परिषद् पिछले 12 वर्षों से अविरत यह आयोजन हर साल करती आ रही है।

कार्यक्रम में स्वामी वात्सल्य एवं मुख्य पीठिका पर विराजमान का लाभ बाडमेर निवासी श्री चम्पालालजी रिखबचंदजी श्रीश्रीमाल परिवार देवडा वालों ने लिया। परिषद् के अध्यक्ष संघवी मुकेश मरडिया द्वारा पूजन में पधारे समस्त महानुभावों को धन्यवाद दिया। -प्रेषक धनपत बी. कानुंगो

जैन पत्र-पत्रिका निर्देशिका प्रकाशित होगी

जैन धर्म के प्रचार-प्रसार एवं जैन शासन प्रभावना की जानकारी लोगों तक पहुँचाने के लिए हिन्दी, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी एवं कन्नड़ आदि भाषाओं में अनेक पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशन हो रहा है। सभी पत्र-पत्रिकाओं की सम्पूर्ण जानकारी के साथ ''जैन पत्र-पत्रिका निर्देशिका-2014'' का प्रकाशन श्री जे. के. संघवी (पूर्व संपादक-शाश्वत धर्म) एवं चिमनलाल कलाधर (लेखक एवं पत्रकार) द्वारा शीघ्र ही होने जा रहा है। जैन पत्र-पत्रिका के सम्पादकों से निवेदन है कि कृपया अपनी पत्रिका की ताजी एक प्रति शीघ्रतया निम्नांकित पते पर भिजवायें।

श्री जे. के. संघवी, मो. 098920 07268

305, स्टेशन रोड़, संघवी भवन, शंकर मंदिर के सामने, थाने (वेस्ट)-400 601

तपस्या निमित्त पंचाह्निका महोत्सव आयोजित हुआ

बाड़मेर के जिन कांतिसागरसूरि आराधना भवन में श्री दादा गुरूदेव इकतीसा के सामूहिक पाठ अनुष्ठान की स्थापना पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या प.पू. सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 की पावन निश्रा में खरतरगच्छ संघ व चातुर्मास लाभार्थी शांतिलाल नीरजकुमार छाजेड़ परिवार की उपस्थिति में 06 सितम्बर को हुआ। आराधना भवन के प्रांगण में गुरूदेव दरबार सजाया गया। उसके सम्मुख बैठकर प्रत्येक श्रद्धालु द्वारा 11 बार प्रतिदिन पठन किया गया।

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री संवेगप्रज्ञाश्रीजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. के मासक्षमण तथा पर्युषण पर्व पर सम्पन्न हुई सिद्धि तप, अट्ठाई आदि विविध तपाराधना के उपलक्ष्य में श्री जिनकांतिसागरसूरि आराधना भवन में गुरूवर्या सौम्यगुणाश्रीजी म. की निश्रा में 17 सितम्बर से 21 सितम्बर तक पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन हुआ। भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

इस पांच दिवसीय कार्यक्रम में प्रतिदिन दिन में पूजा व महापूजन एवं रात्रि में भक्ति भावना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। बाडमेर में चातुर्मास का अनोखा ठाट लगा है। प्रवचन आदि कार्यक्रम में विशाल उपस्थिति रहती है।

युवा संगठन-गुन्टूर के चुनाव संपन्न

गुन्टुर के लगभग 40 वर्ष पूर्व सेवा के लिए स्थापित श्री जैन युवा संगठन के आगामी तीन वर्षीय कार्यकाल हेतु चुनाव, अरिहंत धाम तीर्थ में 14/09/2014 को सुरेश कांकरिया की अध्यक्षता में संपन्न हुए।

नमस्कार महामन्त्र का स्मरण कर चुनाव की प्रक्रिया हेतु सलाहकार समिति द्वारा अध्यक्ष- श्री अशोक भन्साली, उपाध्यक्ष- अरविन्द सिंघी, देवराज छोजेड़, महावीर सोलंकी, सचिव- मुकेश चौपड़ा, सहसचिव- गौतमचन्द बागरेचा, अमित सालेचा, कैलाश सिंघी, कोषाध्यक्ष- अरविन्द बाल्दिया, सहकोषाध्यक्ष- महेन्द्र पोरवाल, मनीष गुलेच्छा, को सर्वसहमती से मनोनीत किया गया। तत्पश्चात सलाहकार समिती के सदस्य चुने गए। जिसमें विनोद बागरेचा, जे. पी. शाह, महावीर सालेचा, ललित सालेचा, विमल कुमार चौहान, निर्मल बेडेचा, सुरेश कांकरिया, जयन्तिलाल कंकुचौपड़ा, शान्तिलाल पोरवाल को चुना गया एवं उपरोक्त में से विनोद बागरेचा को सलाहकार समिती का चेयरमेन मनोनित किया गया।

उल्लेखनीय है कि यह संस्था अब तक कई धार्मिक कार्य, शैक्षणिक, चिकित्सा एवं जन सुविधाओं को अन्जाम दे चुकी है तथा वर्तमान में भी दे रही है।

चौहटन में उपधान तप

उपधान तप
जप, तप और क्रिया का त्रिवेणी संगम

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्ति सागरसूरीश्वरजी म. के शिष्य प्रशिष्य पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. और पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में धर्मधरा चौहटन नगरी में चार्तुमासिक आराधना का जोरदार माहौल बना हुआ है।

मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. व मनीषप्रभसागरजी म. की प्रेरणा से श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ चौहटन में उपधान तप की आराधना का निर्णय किया गया। इस हेतु श्री कुशल कान्ति उपधान तप समिति का गठन किया गया है। श्री बाबुलालजी सेठिया को संयोजक बनाया गया है। उपधान आराधना का मुहुर्त्त प्राप्त करने हेतु श्रीसंघ का प्रतिनिधि मंडल इचलकरंजी में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के सानिध्य में पहुंचा। पूज्य उपाध्याय श्री ने उपधान तप में सभी को जप-तप-आराधना एवं स्वाध्याय में जुड़े रह कर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करने का उपदेश देते हुये उपधान तप प्रथम प्रवेश मिगसर वदि 12 दि. 19-11-2014 व द्वितीय प्रवेश मिगसर वदि 14 दि. 21-11-2014 व माला का मुहुर्त्त माघ वदि 2 दि. 07-01-2015 का शुभ मुहुर्त्त प्रदान किया।

आराधना के इच्छुक जन 070739 00641 एवं 094614 89609 पर संपर्क करें।

बिजापुर में परमात्म भक्ति महोत्सव

महत्तरा पद विभूषिता पूज्या श्री चम्पाश्रीजी म. सा. की शिष्या एवं मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री मधुरिमाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री अर्पितप्रज्ञाश्रीजी म. की पावन निश्रा में बिजापुर में पूज्या सिद्धितप आराधिका साध्वी श्री समर्पितप्रज्ञाश्रीजी म. के तप अनुमोदनार्थ, विविध तप एवं महत्तरा पद विभूषिता पूज्या श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की 26 वीं पुण्यतिथि के निमित्त पंच दिवसीय परमात्म भक्ति महोत्सव उल्लास पूर्वक संपन्न हुआ।

ता. 31.8.2014 को श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा के लाभार्थी शा. रतनचंदजी वीरचंदजी देवडा धोका, मरुधर में गढ़ सिवाना, ता. 1.9.2014 को बारह व्रत पूजा लाभार्थी श्री पार्श्वजिन सामायिक मंडल, बिजापुर द्वारा, ता. 2.9.2014 सामूहिक वीस स्थानक आराधना सह वीस स्थानक पूजन लाभार्थी शा. वी. जी. पारेख एण्ड ब्रदर्स, मरुधर में समदड़ी, ता. 3.9.2014 को तपस्वीयों का वरघोड़ा, गुणानुवाद व नियमसहित 26 लक्की ड्रा निकाले गये। दोपहर में नवांगी टीकाकार प.पू. श्री अभयदेवसूरि रचित स्थंभन पार्श्वनाथ स्तोत्र जयतिहुअण महापूजन लाभार्थी शा. संघवी जी.पी. पोरवाल, मरुधर में दयालपुरा की तरफ से आयोजित हुआ। ता. 4.9.2014 दादा गुरुदेव महापूजन लाभार्थी शा. पारसमलजी धनराजजी धारीवाल, मरुधर में गढ़ सिवाणा द्वारा पढाया गया।

हॉस्पेट में उद्घाटन 12 दिसम्बर को

हॉस्पेट नगर में एम. जे. नगर में श्री वासुपूज्य मंदिर के पास श्री पार्श्व पद्मावती आराधना भवन का निर्माण मोकलसर निवासी श्री गिरधारीलालजी शेराजी पालरेचा परिवार द्वारा किया गया है। जिसका उद्घाटन 12 दिसम्बर 2014 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में किया जायेगा। परिवार के श्री बाबुलालजी पालरेचा परिवार ने पूज्यश्री से विनंती की, जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने यह मुहूर्त्त प्रदान किया। श्री वासुपूज्य मंदिर का निर्माण भी इस परिवार द्वारा करवाया गया था, जिसकी प्रतिष्ठा पूज्यश्री के कर कमलों द्वारा संपन्न हुई थी।

मुख्य आयकर आयुक्त शिल्पकला देखकर अभिभूत हुए

जैसलमेर में दि. 28.09.2014 मुख्य आयकर आयुक्त एल.आर सिंह ने स्वर्णनगरी में सोनार किला एवं जैन मंदिर के दर्शन किये। मुख्य आयुक्त सिंह ने कहा की मंदिरों की विशिष्ट वास्तुकला शिल्प सौंदर्य एवं मूर्तिकला को देखकर वे अभिभूत हो गए।

जैसलमेर कला वैभव शिल्प का अदभूत खजाना है। वे दशहरा चौक से सीधे जैन मंदिर पहुँचे तथा मंदिर में सपत्निक भगवान चिंतामणी पार्श्वनाथ की अर्चना कर आरती की। एवं ज्ञान भंडार का अवलोकन किया। जैन मंदिर पहुँचने पर जैन ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश राखेचा, जैन संघ के अध्यक्ष राजमल जैन, प्रवक्ता महेन्द्र बाफना, सुमेरमल जिन्दाणी, शेरसिंह राखेचा, मुख्य व्यवस्थापक चेतन बम्ब अन्य पदाधिकारीयों ने उनका बहुमान किया गया।

जैसलमेर दुर्ग में आठ जैन मंदिर है जिनमें छ हजार छ सौ प्रतिमाएं विराजमान है तथा यहाँ जिनभद्रसूरि ज्ञान भण्डार में दादागुरुदेव की चादर चौल पट्टा मुहपत्ती, प्राचीन ताड़पत्रों, भोजपत्रों, दुर्लभ पुस्तकों, एवं काष्ठ पट्टिकाओं का अमूल्य भण्डार सुरक्षित है।

–महेन्द्र बापना

नंदुरबार में मणिधारी बालिका परिषद् की स्थापना

नंदुरबार में पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में पूजनीया बहिन म.डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से बालिकाओं का एक संगठन गठित किया गया। जिसका नाम रखा गया है– श्री मणिधारी बालिका परिषद्! इस अवसर पर पूजनीया बहिन म.डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ने कहा– संगठन में अपार शक्ति है। बालिकाओं का संगठन अपने आप में आदर्श है। इससे उन्हें सामूहिक संस्कारों के दिव्य वातावरण में जीने का उत्तम अवसर प्राप्त होता है। साथ ही अपनी योग्यता और क्षमता को प्रकट करने का भी मौका मिलता है।

श्री जिन कुशल अकादमी, दुर्ग

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, दुर्ग के तत्त्वावधान में जैन समाज के युवक-युवतियों को कंप्युटर ज्ञान एवं एकाउटिंग-टैली के प्रशिक्षण हेतु श्री जिनकुशल अकादमी की स्थापना की गयी।

अकादमी का शुभारंभ दि. 28-09-2014 को किया गया। इस पावन अवसर पर समाज के वरिष्ठ लोगों की उपस्थिति व पूज्या साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा प्राप्त हुयी।

अकादमी की जिम्मेदारी सी.ए. श्रीपाल कोठारी, सी.ए. पदम बरडिया और सी.ए. मिनेश छाजेड को दी गयी।

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संस्था संरक्षक

श्री मुल्तान जैन श्वे. सभा (श्री मुल्तान मन्दिर), आदर्श नगर, जयपुर
श्री अवन्ति पार्श्व. तीर्थ जैन श्वे.मू.पू. मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन
श्री जैन मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट, इचलकरंजी
श्री जैन श्वे. संघ २(महावीर साधना केन्द्र) जवाहर नगर, जयपुर
श्री जैन श्वे. संस्था (वासुपूज्य आराधना भवन), मालवीय नगर, जयपुर
श्री दिल्ली गुजराती श्वे.मू.पू. जैन संघ गुजरात विहार, दिल्ली
श्री जिनकुशलसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाड़ी ट्रस्ट, नईदिल्ली
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ, पचपदरा
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ सम्पत्ति ट्रस्ट, भीलवाड़ा
श्री देराऊर पार्श्वनाथ तीर्थ एवं देराऊर दादावाड़ी, जयपुर
श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर
श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति, हस्तिनापुर
श्री जैन श्वे. वासुपूज्यजी म. का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर
श्री जैन श्वे. चौमुख दादावाड़ी वैशाली नगर, अजमेर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ जाटावास, लोहावट
श्री बडौदा जैन श्वे. खरतरगच्छ, संघ, वडोदरा
श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, जयपुर
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर
श्री अजितनाथ जैन नवयुवक मंडल, नंदुरबार
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, सांचोर
श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक श्री संघ, उदयपुर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, अजमेर
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, गाजियाबाद
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, गुरला (भीलवाड़ा)
जैन श्री संघ, सेलम्बा, (नर्मदा, गुजरात)
श्री पार्श्वमणि तीर्थ, पेद्दतुम्बलम्, आदोनी
श्री जैन श्वे. संघ जैन मंदिर, तलोदा
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, केकड़ी
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, ब्यावर
श्री जैन श्री संघ, धोरीमन्ना
श्री उम्मेदपुरा जैन श्री संघ, सिवाना
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, खापर
जैन श्री संघ, वाण्याविहिर
श्री कुशल पत संस्था, खापर
श्री नमिनाथ पत संस्था, खापर
श्री हाला जैन संघ, ब्यावर-फालना
श्री जिन हरि विहार समिति, पालीताणा
श्री हरखचंद नाहटा स्मृति न्यास, नई दिल्ली
श्री जिनदत्तसूरि जैन श्वे. दादावाडी, दोंडाईचा
श्री जैसलमेर लौद्रवपुर जैन श्वे. ट्रस्ट, जैसलमेर
श्री जिन कुशल मंडल (बाड़मेर) इचलकरंजी
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुम्बई
श्री रायॅल काम्पलेक्स श्वे. मूर्तिपूजक संघ, मुंबई
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, भायंदर, मुंबई
श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, दोड्डबल्लापुर (बैंगलोर)
श्री संभवनाथ श्वेताम्बर जैन मॉदिर ट्रस्ट, वडपलनी, चैन्नई
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन श्वे. मॉदिर ट्रस्ट, अरूम्बकम, चैन्नई
श्री कुन्थुनाथ जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ (रजि.) सिंधनूर
श्री धर्मनाथ जैन मॉदिर ट्रस्ट-जिनदत्तसूरि जैन सेवा मंडल, चेन्नई
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी बाड़मेर ट्रस्ट- मालेगॉव
श्री जैन श्वे. आदीश्वर भगवान मॉदिर ट्रस्ट, सोलापुर
श्री जैन श्वे. मू.पू. श्री संघ, बिजयनगर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, जसोल
श्री शीतलनाथ भगवान मन्दिर एवं दादा जिनकुशलसूरि समिति, पादरू
श्री आदिनाथ जिनमॉदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, हुबली
- जैन श्वेताम्बर श्री संघ, शेरगढ़
- श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, इन्दौर
- श्री जैन मरुधर संघ, हुबली (कर्णाटक)
- श्री जैन श्वेताम्बर मॉदिर ट्रस्ट, सारंगखेडा
- श्री जिन कुशल सूरि बाडमेर जैन श्री संघ, सूरत
- श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, अग्रहार, मैसूर
- श्री जैन श्वेताम्बर मू.पू. श्री संघ, ऊटी (नीलगिरी तमिलनाडू)
- दादावाड़ी श्री जिनकुशलसूरि जिनचन्द्रसूरि ट्रस्ट, अयनावरम् चैन्नई
- श्री शान्तिनाथ जिनालय ट्रस्ट, चौहटन

जहाज मंदिर में गौशाला बनेगी

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर मांडवला में गौशाला खोलने का निर्णय किया गया है। इसके लिये 15-20 बीघा विशाल भूखण्ड खरीदा जायेगा। जहाँ गोशाला का प्रारंभ किया जायेगा।

इस आशय का निर्णय पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. की पावन निश्रा में जहाज मंदिर ट्रस्ट मंडल की ता. 15 सितम्बर 2014 को संपन्न हुई बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री द्वारकादासजी डोसी ने की।

गौशाला के संचालन के लिये ट्रस्ट के मंत्री श्री सूरजमलजी देवडा धोका के संयोजनत्व में समिति का गठन किया गया। जिसमें श्री द्वारकादासजी डोसी, श्री रामरतनजी छाजेड, श्री पारसमलजी बरडिया को सम्मिलित किया गया। इस बैठक में महामंत्री डॉ. यू.सी. जैन ने बताया कि जहाज मंदिर में कांच का अनूठा कार्य चल रहा है। सभी यात्री मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा करते हैं।

मूर्ति भण्डार का कार्य पूर्ण हो चुका है। मैदान में पेवर ब्लॉक लगाने का कार्य भी पूर्ण हो चुका है। पेढी के सामने विशाल बगीचा लगाने का कार्य प्रारंभ है। जहाज मंदिर के प्रवेश द्वार पर संगमरमर के उत्तम पाषाण के कारीगरी युक्त तोरणद्वार का कार्य पूर्ण हो चुका है।

आगामी योजना की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि सुलभ शौचालय का नवनिर्माण शीघ्र ही प्रारंभ किया जायेगा। इसके साथ ही पेढी के पास एक नया उपाश्रय, चारदीवारी के सौन्दर्यकरण का कार्य एवं स्टाफ क्वार्टर का कार्य भी शीघ्र ही प्रारंभ किया जायेगा।

उन्होंने बताया कि यात्रियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। भोजनशाला आदि का कार्य पूर्ण रूप से संतोषजनक है। जहाज मंदिर में चल रहे निर्माण कार्य के प्रति संतोष व्यक्त किया गया।

खरतरगच्छ पेढी की बैठक संपन्न

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की कार्यकारिणी समिति की बैठक पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में ता. 14 सितम्बर को पेढी के अध्यक्ष श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें दादावाडी जीर्णोद्धार/निर्माण हेतु आये हुए निवेदन पत्रों पर विचार करके अनुदान अर्पण करने का निश्चय किया गया।

श्री पुरूषोत्तदासजी शंकरलालजी सेठिया, बालोतरा-बाडमेर वाले पेढी के नये सदस्य बने। उन्हें धन्यवाद अर्पण किया गया। मेडतासिटी की दादावाडी के जीर्णोद्धार के संबंध में संघवी श्री विजयराजजी डोसी को जिम्मेदारी सौंपी गई। साबला में पहाडी पर स्थित 600 वर्ष प्राचीन मणिधारी दादा गुरूदेव जिनचन्द्रसूरि की चमत्कारी दादावाडी के जीर्णोद्धार के संबंध में श्री गजेन्द्रजी भंसाली ने बताया कि वहाँ एक लाख वर्गफीट के भूखण्ड पर चारदीवारी का कार्य पूर्ण हो चुका है। जीर्णोद्धार का कार्य अब प्रारंभ होगा।

तत्त्व परीक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.

जहाज मंदिर पहेली 102

अवश्य करने योग्य क्रिया को आवश्यक कहते है। इसे प्रतिक्रमण भी कहा जाता है।

प्रतिक्रमण के सूत्रों को याद करना और प्रतिदिन प्रतिक्रमण करना श्रमण और श्रावक, दोनों के लिये जरूरी है। अत: बहुल श्रावक वर्ग को प्रतिक्रमण के सूत्र कंठस्थ है। इस पहेली में आपको प्रतिक्रमण के सूत्रों का उपयोग करना है।

नीचे दिये गये देवसिअ प्रतिक्रमण के शब्दों ने अपने काने, मात्रा, विसर्ग, बिंदी आदि का त्याग किया है, इतना ही नहीं, हर शब्द के अक्षरों ने अपनी जगह भी बदल दी है।

आप सम्यक प्रज्ञा का प्रयोग करके उनके काना-मात्रा आदि लगाओ और सही स्थान पर अक्षरों को बिराजमान करो, साथ ही साथ शब्द से सम्बन्धित सूत्र का नाम भी अंकित करों। 30 में से 25 शब्द सही होने जरूरी हैं।

उदाहरणार्थ-

त्तयच्छप	पायच्छित्त	तस्स उत्तरी सूत्र
1 कणइछच्र -	.....	.....
2 सचलह-	.....	.....
3 गअसर-	.....	.....
4 णणअहज-	.....	.....
5 अअथभ-	.....	.....
6 णमन-	.....	.....
7 वशय-	.....	.....
8 धधबग-	.....	.....
9 वदश्रयक-	.....	.....
10 सअदव-	.....	.....
11 णउसच्च-	.....	.....
12 रएहणव-	.....	.....
13 ररपपदव-	.....	.....
14 एकह-	.....	.....
15 रयसयप-	.....	.....
16 परम-	.....	.....
17 यइसम-	.....	.....
18 सणसरपह-	.....	.....

19 अप्पणएह– .....

20 चच्भवए– .....

21 लगनहण– .....

22 एजज्णवज– .....

23 वअसद– .....

24 सहसव्व– .....

25 हरभरवय– .....

26 यमहस– .....

27 यतनज– .....

28 तठप– .....

29 लफस– .....

30 यकउध्पय– .....

जहाज मन्दिर पहेली 102
झेरॉक्स करके ही भरें व
इस पत्ते पर भेजे →

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा: सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन,
मुम्बई-400 004 (महा.) मो. 98693 48746

– नियम –

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 नवम्बर तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल दिसम्बर में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. जहाज मन्दिर पहेली प्रेषक इस पहेली की झेरॉक्स करवाकर भेजे।
7. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
8. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:– पुरस्कार प्रायोजक :–
शा. सुगनचंदजी
राजेशकुमारजी बरडिया
(छबड़ा)
ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | |

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक

श्री लालचन्दजी कानमलजी गुलेच्छा, अक्कलकुआं
श्री राजेन्द्रकुमार राणुलालजी डागा, अक्कलकुआं
श्री भंवरलालजी हस्तीमलजी कोचर, अक्कलकुआं
श्री ज्ञानचन्दजी रामलालजी लूणिया, अजमेर
श्री पूनमचन्दजी नैनमलजी मरड़िया, डंडाली- अहमदाबाद
श्री माणकमलजी मांगीलाल नरेशकुमारजी धारीवाल, चौहटन-अहमदाबाद
श्री विनोद शर्मा पुत्र श्री घनश्यामप्रसाद शर्मा, सोमपुरा, आगरा
श्री जगदीशचन्द, नितेश कुमार एण्ड कम्पनी, इचलकरंजी
श्री देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री संपतराजजी लूणकरणजी संखलेचा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़, रामसर- इचलकरंजी
श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले इचलकरंजी
श्री ओमप्रकाशजी मुलतानमलजी वैद मुथा कवास वाले, इचलकरंजी
श्री छगनलालजी देवीचंदजी मेहता, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अशोककुमारजी सुरतानमलजी बोहरा, भिंयाड़-इचलकरंजी
श्री मिश्रीमलजी विजयकुमार रणजीत ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री शिवकुमार रिखबचंदजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
स्व. रूपसिंहजी मदनसिंह रतनसिंह राजपुरोहित-इचलकरंजी
श्री फरसराजजी रिखबदासजी सिंघवी, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री हीराचंदजी मांगीलालजी बागरेचा, सिवाना-इचलकरंजी
शा. मोतीलाल एण्ड सन्स, इचलकरंजी
श्री प्रवीणकुमार पृथ्वीराजजी ललवानी, इचलकरंजी
श्री पुखराजजी आसुलालजी बोहरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री पुखराजजी सरेमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री भीखचंदजी सुमेरमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी भूरचंदजी मालू, हरसाणी-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी रमेश अशोक लूंकड़ मोकलसर-इचलकरंजी
श्री रिषभलाल मांगीलालजी छाजेड़, इंचलकरंजी
शा. पीरचंद बाबुलाल एण्ड कं., बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अरूणकुमारजी बापूलालजी डोसी, इन्दौर
श्री टीकमचन्दजी हीराचन्दजी छाजेड़, उज्जैन
डॉ. यू.सी. जैन अजयजी संजयजी लषितजी पार्थ जैन, उदयपुर
श्री फतेहलालजी सुल्तानजी लक्ष्मणजी आजादजी संजयजी सिंघवी, उदयपुर
श्री मोहनसिंहजी पुत्र राजीव पौत्र चिराग दलाल, सुराणा, उदयपुर
श्री सुधीरजी चावत, उदयपुर
श्री किरणमलजी सावनसुखा, उदयपुर
श्रीमती शान्ति मेहता ध.प.श्री विजयसिंहजी मेहता, उदयपुर
श्री दौलतसिंहजी प्रतापसिंहजी गाँधी, उदयपुर
श्री शंकरलालजी बाफना, उदयपुर
श्रीमती शांतादेवी जुहारमलजी गेलड़ा, उदयपुर
श्री नगराजजी पवनराजजी अशोककुमारजी मेहता, उदयपुर
श्री बलवन्तसिंहजी करणसिंह सुरेन्द्रसिंह पारख, उदयपुर
श्री मीठालालजी मनोजकुमार गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद-बैंगलोर
श्री दिलीपजी छाजेड़, खांचरोद-उज्जैन
श्री कुरीचन्दजी चन्दनमलजी मलासिया, ऋषभदेव
शा. कांतिलालजी पारसमलजी कागरेचा, ओटवाला
श्रीमती शांतिदेवी जुगराजजी पंचाणमलजी मरडिया, चितलवाना-कारोला-मुंबई
घोड़ा श्री सुमेरमलजी मोतीलालजी बाबूलालजी श्रीश्रीमाल, केशवणा

श्री रामरतनजी नरायणदासजी छाजेड़, केशवणा-डोम्बीवल्ली
श्री लक्ष्मीचन्दजी केसरीमलजी चण्डालिया, कोटा
श्री पन्नालालजी महेन्द्रसिंहजी गौतमकुमारजी नाहटा, कोलकात्ता-दिल्ली
श्री जगदीशकुमार खेताजी सुथार, कोलीवाड़ा
श्री प्रेमचन्दजी संतोकचन्दजी गुलेच्छा, खापर
सौ. रूपाबाई गुलाबचन्दजी चौरड़िया, खापर
श्री पारसमलजी मांगीलालजी लूणावत, खेतिया
श्री प्रमोदकुमारजी, बंशीलालजी भंसाली, खेतिया
श्री किशनलालजी हसमुख कुमार मिलापजी भंसाली, खेतिया
श्रीमती मानकुँवरबाई गेनमलजी भंसाली, खेतिया-नासिक
श्री नेवलचन्दजी मोहनलालजी जैन, गाजियाबाद
शा. मुलतानमलजी भवंरलालजी नाहटा, गांधीनगर
मिस्त्री मोहनलाल आर. लोहार, पो. चांदराई जि.जालोर
शा. जांवतराजजी भीमराजजी मोहनलालजी गांधी, चितलवाना
श्री लाधमलजी मावाजी मरड़िया, चितलवाना
श्री सुरेशकुमार हिन्दूमलजी लूणिया, धोरीमन्ना-चैन्नई
श्री हीराचंदजी बबलसा गुलेच्छा, टिंडीवनम-चैन्नई
शा. डूंगरचंदजी यशकुमारजी ललवानी, सिवाना-चैन्नई
श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी नरेशचंदजी रांका, चैन्नई
शा. समरथमलजी सोनाजी रांका, उम्मेदाबाद-चैन्नई
श्री सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया, चैन्नई
श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टांटिया, जोधपुर-चैन्नई
शा. गिरधारीलालजी बादरमलजी संखलेचा, पादरू-चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी प्रकाशचंदजी लोढ़ा, चैन्नई
श्री पदमचंदजी दिनेशकुमारजी कोठारी, चैन्नई
मै. एम. के. कोठारी एण्ड कम्पनी, चैन्नई
श्री वीरेन्द्रमलजी आशीषकुमार मेहता वडपलनी-चैन्नई
श्री एस. मोहनचंदजी ढ़ड्ढा, चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी मूलचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
श्री माणकचंदजी धर्मचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
शा. लालचन्दजी कान्तीलालजी छाजेड़, गढ़सिवाना-चैन्नई
श्रीमती इचरजबाई मिलापचंदजी डोसी, चैन्नई
एम. नरेन्द्रकुमारजी कवाड़, चैन्नई
श्री नेमीचंदजी राजेशकुमारजी कटारिया, चैन्नई
श्री आर. मफतलाल, सौभागबेन चन्दन, चैन्नई
श्री बाबूलालजी हरखचन्दजी छाजेड़ (सी.टी.सी.), चेन्नई
शा. जेठमलजी आसकरणजी गुलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
मै. राखी वाला, चैन्नई
श्री द्वारकादासजी पीयुष अनिल भरत महावीर डोशी, चौहटन
श्री महताबचन्दजी विशालकुमारजी बांठिया, जयपुर-मुंबई
श्री जसराज आनन्दकुमार चौपड़ा, जयपुर
शा. प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढ़ा, जयपुर
श्री जुगराजजी(सी.ए.) कैलाशजी दिनेशजी चौधरी, जालोर-भायंदर
श्री विमलचंदजी सौ. मेमबाईसा सुराणा, जयपुर
श्री किशनचन्दजी बोहरा सौ. सुधादेवी, जयपुर
श्री कनकजी श्रीमाल, जयपुर
श्री महावीरजी मुन्नीलालजी डागा, जयपुर
श्रीमती जतनबाई ध.प. स्व. मेहताबचंदजी गोलेछा, जयपुर
श्रीमती सरोज फतेहसिंहजी सिद्धार्थजी बरड़िया, जयपुर
श्री रूपचन्दजी नरेन्द्र देवेन्द्र नमनजी भंसाली, हालावाले- जयपुर
श्री दुलीचन्दजी, धर्मेशकुमारजी टांक, जयपुर
श्री महरचन्दजी मनोजकुमारजी धांधिया, जयपुर
श्री मनमोहनजी अनुपजी बोहरा, जयपुर
श्री जितेन्द्रजी नवीन अजय नितीन महमवाल-श्रीमाल, जयपुर
श्री राजेन्द्रकुमारजी संजयजी संदीपजी छाजेड़, जयपुर
श्री इन्द्रचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर
श्री विमलचन्दजी महावीरचन्दजी पंसारी, जयपुर
श्री पारसमलजी पंकजकुमारजी गोलेछा, जयपुर
श्री शांतिचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी पुंगलिया, जयपुर
श्री हुकमीचन्दजी विजेन्द्रजी पूर्णेन्द्रजी कांकरिया, जयपुर
श्री ताराचन्दजी विजयजी अशोकजी राजेन्द्रजी संचेती, जयपुर
श्री भीमसिंहजी तेजसिंहजी खजांची, जयपुर
श्री सौभागमलजी ऋषभकुमारजी चौधरी, जयपुर
श्री संतोषचन्दजी विजयजी अजयजी झाड़चूर, जयपुर
श्री रतनलालजी अतुल अमित श्रीश्रीमाल हालावाले जयपुर
श्री माणकचन्दजी राजेन्द्रजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा, जयपुर
श्री उमरावचन्दजी प्रसन्नचन्दजी किशनचन्दजी डागा, जयपुर
श्री अभयकुमारजी अशोककुमार अनूपकुमार पारख-जयपुर

श्री त्रिलोकचन्दजी प्रेमचन्दजी सिंघी, जयपुर
श्री घनश्यामदास दीपककुमारजी पारख, हालावाले जयपुर
श्री सुरेन्द्रमलजी गजेन्द्रजी धर्मेन्द्रजी पटवा, जालौर
संघवी शा. अशोककुमारजी मानमलजी गुलेच्छा, जीवाणा-चैन्नई
श्री भंवरलालजी, बाबूलालजी पारख, जीवाणा
संघवी कानमलजी बाबूलालजी नेमीचंदजी अशोकजी गोलेछा, जीवाणा-चेन्नई
श्री खीमचन्दजी अशोककुमारजी कंकूचौपड़ा, जीवाणा-बैंगलोर
श्रीमती प्रेमलताजी श्री चन्द्रराजजी सिंघवी, जोधपुर
श्री गोविन्दचन्दजी राजेशजी राकेशजी मेहता जोधपुर-मुम्बई
श्री लक्ष्मीचन्द हलवाई पुत्र श्री जेठमलजी अग्रवाल, जोधपुर
श्री लूणकरणजी घीसुलालजी सौ. चन्द्रादेवी सेठिया, तलोदा
श्रीमती इन्द्रा महेशजी जैन नाहटा नई दिल्ली
श्री बी.एम. जैन लक्ष्मीनगर, दिल्ली
श्री घनश्यामदासजी नवीनजी सुशीलजी सुनीलजी जैन, नई दिल्ली
श्री शांतिलालजी जैन दफ्तरी, नई दिल्ली
श्री शीतलदासजी विरेन्द्रकुमारजी राक्यान, नई दिल्ली
श्री ज्ञानचन्दजी महेन्द्रकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री पवित्रकुमारजी सुनीलजी, गुनीतजी बाफना, कोटा-नई दिल्ली
श्री अरुणकुमारजी हर्षाजी हर्षावत, नई दिल्ली
श्री राजकुमारजी ओमप्रकाशजी रमेशकुमारजी चौरड़िया, नई दिल्ली
श्री मोतीचन्दजी श्रीमती आभादेवी पालावत, नई दिल्ली
श्री विरेन्द्रजी राजेन्द्रजी अभिषेकजी आदित्यजी पीयूषजी मेहता, दिल्ली
श्री रिखबचंदजी राहुलकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री अशोककुमारजी श्रीमती चंदादेवी जैन, नई दिल्ली
श्रीमती नीलमजी सिंघवी, नई दिल्ली
श्रीमती विजयादेवी धीरज बहादुरसिंहजी दुग्गड़, नई दिल्ली
श्री शांतिप्रकाशजी अशोककुमार प्रवीण सिंधड़, अनूपशहर, नई दिल्ली
श्रीमती भारतीबेन शांतिलालजी चौधरी, नई दिल्ली
श्री सुमेरमलजी मिश्रीमलजी बाफना, मोकलसर-दिल्ली
श्री चन्द्रसिंहजी विपुलकुमारजी सुराणा, दिल्ली
श्री प्रकाशकुमारजी प्रेणितकुमारजी नाहटा, जसोल-दिल्ली
शा. महेशकुमारजीर विरधीचंदजी गांधी, धोरीमन्ना
श्रीमती भंवरीदेवी गोरधनमलजी प्रतापजी सेठिया, धोरीमन्ना
संघवी मुथा चन्दनमलजी महेन्द्र नरेन्द्र तातेड़, पादरू-नंदुरबार
श्री भँवरलालजी ललित राजु कैलाश गौतम संखलेचा, पादरू-चैन्नई
श्री मूलचंदजी बख्तावरमलजी बाफना हीराणी, पादरू
संघवी श्री पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड़, पादरू-मुम्बई-चैन्नई
श्री भंवरलालजी नेमीचन्दजी कटारिया, पादरू
श्री रूपचन्द जवेरीलालजी गोलेछा ढालूवाले, पादरू
मेहता शा. पुखराज सुमेरमलजी तातेड़, पादरु-सेलम
श्री बाबूलालजी शर्मा, राकांवत डेकोरेटर्स, तखतगढ़-पाली
शिल्पी श्रवणकुमार सुरताजी प्रजापति, गोदावरी मार्बल, पिण्डवाड़ा
श्री रतनचन्दजी सौ. निर्मलादेवी बच्छावत, फलोदी
श्री रमेशचन्दजी सुशीलकुमारजी बच्छावत, फलोदी
श्री मनोहरमलजी दलपतकुमार महेश हरीश नाहटा, हालावाले फालना
श्री खूबचन्दजी चन्दनमलजी बोहरा, हालावाले फालना
श्री मोतीचन्दजी फोजमलजी झाबक, बड़ौदा
श्री चम्पालालजी झाबक परिवार, बड़ौदा
श्री आसुलालजी मांगीलालजी बाबूलालजी डोशी, चौहटन-बाड़मेर
श्री चिन्तामणदासजी, तगामलजी बोथरा, बाड़मेर
श्री रिखबचंदजी प्रकाशचन्दजी सेठिया, चौहटन-बाड़मेर
श्री रतनलालजी विनोदकुमार गौतमकुमार बोहरा, हालावाले, बाड़मेर
श्री आसूलालजी ओमप्रकाशजी संकलेचा, बाड़मेर
श्री रामलाल, महेन्द्र, भरत, धवल मालू, डाकोर-बाडमेर
श्री जगदीशचन्द देवीचन्दजी भंसाली, बाड़मेर-पाली
श्री शंकरलाल केशरीमलजी धारीवाल, बाड़मेर
श्री बाबूलाल भगवानदासजी बोथरा, बाड़मेर
शा. मनसुखदास नेमीचंदजी पारख, हरसाणीवाला, बाड़मेर
शा. सुरेशकुमार पवनकुमार मुकेशकुमार पुत्र श्री शंकरलाल बोहरा, बाड़मेर
श्री मुन्नीलालजी जयरूपजी नागोत्रा सोलंकी, बालवाड़ा

शा. अमृतलालजी पुखराजजी कटारिया सिंघवी बालोतरा-मुंबई

श्री उत्तमराजजी पारसकंवर सिंघवी, बिजयनगर

श्री सम्पतराजजी सपनकुमारजी गादिया, पाली बैंगलौर

श्री पुखराजजी हस्तीमलजी पालरेचा, मोकलसर-बैंगलोर

शा. घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया, सांडेराव-बैंगलोर

श्री आनन्दकुमारजी कांतिलाल प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, हालावाले बैंगलोर

श्री वरदीचंदजी पंकजकुमारजी महावीरकुमारजी बाफना, बैंगलोर

संघवी श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर-बैंगलोर

श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोककुमारजी बोथरा, बैंगलोर

श्री छगनलालजी शांतिलालजी लूणावत, शांतिनगर बैंगलोर

शा. सज्जनराजजी रतनचंदजी मुथा, बैंगलोर

श्री तेजराजजी मनोजकुमारजी आनन्दकुमारजी मालाणी, मोकलसर-बैंगलोर

शा. मूलचन्दजी किरण अरूण विक्रम पुत्र पौत्र मिश्रीमलजी भंसाली, सिवाना-बैंगलोर

श्री भंवरलालजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर

श्री पारसमलजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर

श्री जुगराजजी घेवरचंदजी पालगोता चौहान, बैंगलोर

श्री कन्हैयालालजी ओटमलजी छगनलालजी सुजाणी रांका, बैंगलोर

श्री गेनमलजी हरकचंदजी लूणिया, बैंगलोर

श्री मोटमलजी कानमलजी सदानी, बैंगलोर

संघवी शा. मांगीलालजी भरतमलजी, बैंगलोर

श्री पी. एच. साह, बैंगलोर

श्री विनोदकुमारजी पारख, बैंगलोर

श्री माणकचंदजी, गौतमचंदजी चौपड़ा, ब्यावर

श्री संजयकुमारजी, कनिष्ठकुमारजी बरडिया, ब्यावर

श्री ओमप्रकाशजी राजेशजी (ओमजी दवाईवाला), ब्यावर

श्री उगमराजजी सुरेशकुमारजी मेहता, ब्यावर

सेठ श्री शंभुमलजी बलवन्तजी यशवंतजी रांका, ब्यावर

श्री मदनलालजी दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर

श्री कुशलचंदजी पारसकुमारजी सतीशकुमारजी मेड़तवाल, ब्यावर

श्री शांतिलालजी सज्जनराजजी कुशलराजजी ऋषभ तातेड़-गडवानी, ब्यावर

श्री कानसिंहजी मधुसूदन सुदर्शन संजय चौधरी कोठियां, भीलवाड़ा

श्री जीवनसिंहजी दीपककुमार राजेशकुमारजी लोढ़ा, गुरलां-भीलवाड़ा

श्री प्रेमसिंहजी राजेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमारजी बोहरा गुरलां-भीलवाड़ा

श्री भंवरलालजी बलवन्तसिंहजी मेहता, गुरलां-भीलवाड़ा

शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी-मल्हारपेठ

संघवी श्री हंसराजजी रमेशजी सुरेशजी पुत्र श्री मोहनलालजी मूथा मांडवला

शा. मोहनलालजी किरण दिनेश प्रवीण पुत्र पौत्र शा. बस्तीमलजी, मांडवला

मूथा शा. नेनमलजी पन्नालालजी सोनवाड़िया, मांडवला

श्री पारसमलजी भानमलजी छाजेड़, मांडवला-मुम्बई

श्रीमती पुष्पाजी ए., केतनजी चेतनजी जैन पाली-मुम्बई

श्री मोतीलालजी ओसवाल, पादरू-मुम्बई

श्री अतुलजी हनवंतचन्दजी भंसाली, जोधपुर-मुम्बई

श्री महेन्द्रकुमारजी शेषमलजी दयालपुरा वाले, मुम्बई

श्री कन्हैयालालजी भगवानदासजी डोसी-मुम्बई

श्री रिखबचन्दजी जैन, मुम्बई

शा. अनिल रणजीतसिंहजी पारख, जोधपुर-मुंबई

श्रीमती टीपूदेवी कालुचंदजी, बदामीदेवी अरविंदजी श्रीश्रीश्रीमाल सांचौर-मुंबई

शा. भंवरलालजी कमलचन्द रिषभ गुलेच्छा, मुम्बई

श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी, मुंबई

श्रीमती सुआदेवी उदयचंदजी नाथाजी, जीवाणा-मुंबई

श्री जितेन्द्र केशरीमलजी सिंघवी, मुंबई

श्री रमेश सागरमलजी सियाल, मुंबई

श्री गौतमचंद डी. भंसाली, मुंबई

शा. सागरमलजी फूलचंदजी सियाल, मुंबई

श्रीमती मथरीदेवी शांतिलालजी वाघेला, सांचौर-मुंबई

श्री मोहनलालजी केवलचंदजी छाजेड़, डुठारिया-मुंबई

श्री चतुर्भुजजी विजयराजजी श्रीश्रीमाल, फालना-मुंबई

श्री भंवरलालजी विरदीचन्दजी छाजेड़, हरसाणी-मुंबई

श्री वंसराजजी मिश्रीमलजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर

श्री मीठालालजी अमीचंदजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री किस्तुरचन्दजी छगनलालजी चौपड़ा, रतलाम
श्री मदनलालजी रायचन्दजी शंखलेशा, रामा-कल्याण
श्री अनूपचन्दजी अनिल अशोक अजय कोठारी, रायपुर
श्री नेमीचन्दजी श्यामसुन्दरजी बेदमुथा, रायपुर
श्री उमेशकुमारजी मुकेशकुमारजी तातेड़, रायपुर
स्व. हस्तीमलजी छोगाजी हिरोणी, रेवतडा-चेन्नई
श्री नथमलजी भंवरलालजी सौ. किरणदेवी पारख, लोहावट
श्रीमती शांताबेन हरकचन्दजी बोथरा, सांचौर
श्री कानूगो प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
श्री मूलचंदजी मिश्रीमलजी बुर्ड, सांचौर-मुम्बई
श्री धुडचंदजी रतीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर-मुम्बई
श्री रावतमल सुखरामदास कमलेश विमल धारीवाल चौहटन-सांचौर
श्री मिश्रीमलजी चन्दाजी मरड़िया, सांचौर
स्व. दाड़मीदेवी श्री पुखराजजी बोथरा, सांचौर
श्री हरकचन्दजी सेवन्तीजी जितेन्द्र विनोद राजेश शाह, सांचौर
शा. प्रकाशंचद पारसमलजी छाजेड़, सांचौर
श्री सुमेरमलजी पुखराजजी बोथरा, सांचौर-हैदराबाद
श्री दिलीपकुमारजी जांवतराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर-मुंबई
श्री जुगराजजी रमेशजी उत्तमजी महेन्द्रजी छाजेड़ सिवाना-मदुराई
श्रीमती सुखीदेवी श्री भीमराजजी बादरमलजी छाजेड़, सिवाना-पूना
श्री पारसमलजी चंपालालजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री प्रकाशकुमार अंकितकुमारजी जीरावला, सूरत
श्री इन्द्रचन्दजी गौतमचन्दजी चौपड़ा, बिलाड़ा-हैदराबाद
श्री माणकचंदजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री बाबूलालजी मालू-सूरत
श्री प्रेमचंदजी गेमरमलजी छाजेड़-बाड़मेर-सूरत
शा. पारसमलजी शेरमलजी गोठी, डांगरीवाला-सूरत
श्री मोहनलालजी हरखचंदजी गुलेच्छा, विजयवाड़ा
श्रीमती जतनदेवी सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, हावड़ा
श्री भीकमचन्दजी बाबूलालजी तोगमलजी गोलेछा, पादरू-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी चौपड़ा, बिलाडा-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी उत्तमचंदजी चौपड़ा, हैदराबाद
-श्री जसराज राणुलालजी कोचर, अक्कलकुआ
-श्री मेघराजजी तेजमलजी ललवानी, अक्कलकुआ
-श्री पुण्यपालजी अनिलजी सुनीलजी सुराणा, इन्दौर
-श्री गेंदमल पुखराजजी चौपड़ा, उज्जैन
-श्री रतनचन्द जयकुमार जिनेन्द्रकुमार चौपड़ा, उज्जैन
-श्री पारसमलजी वी. जैन, सांचौर-बडोदरा
-श्री धवलचन्दजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
-श्री पारसमलजी हंजारीमलजी बोहरा, सांचौर
-श्री चुन्नीलालजी मफतलालजी मरड़िया, सांचौर-सूरत
-श्री गौतमचन्दजी राजमलजी डूंगरवाल, देवड़ा-सूरत
-श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, बाड़मेर-सूरत
-शा. जुगराजजी मिश्रीमलजी तलावट, उम्मेदाबाद-सेलम
-श्री कन्हैयालालजी मुकेशकुमारजी, सोमपुरा, लुणावा

नयनरम्य कैलेन्डर का प्रकाशन

जहाज मंदिर ट्रस्ट द्वारा पिछले दो वर्षों से आकर्षक कैलेन्डर का बहुरंगीय प्रकाशन हो रहा है।
11" गुणा 16" की साइज के 24 पृष्ठीय इस कैलेन्डर में ईस्वी सन् के आधर पर समस्त पर्वों व शुभतिथियों की सूचना है।
इसमें 12 विज्ञापन लिये जाते है।
जिन्हें इसका प्रकाशन करवाना हो, वे सूचना दिरावें...अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें
मुकेश प्रजापत- 098251 05823

जटाशंकर

जटाशंकर

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

स्कूल में अध्यापक ने छात्रों को माता पिता के प्रति भक्ति का पाठ पढाया था। माता पिता के उपकारों की व्याख्या करके उनके प्रति श्रद्धा जगाने का प्रयास किया था। श्रवणकुमार का उदाहरण सुना कर माता पिता की हर आज्ञा मानने का उपदेश दिया था।

उसने छात्रों से पूछा- माता पिता की आज्ञा मानते हो कि नहीं!

कई बच्चों ने उत्तर देने की मुद्रा में अपना हाथ ऊपर उठाया।

अध्यापक ने जटाशंकर से कहा- तुम बताओ!

जटाशंकर तुरंत बोला- मैं तो अपने माता पिता की आज्ञा दुगुनी मानता हूँ।

दुगुनी शब्द सुनकर अध्यापक विचार में पड गया। कोई भी आज्ञा दुगुनी कैसे मानी जा सकती है!

पूछा- दुगुनी से क्या तात्पर्य है तुम्हारा!

जटाशंकर मासुमियत से बोला- मां कहती है- आधी मिठाई खाना। पर मैं उनकी आज्ञा को दो गुना करते हुए मिठाई पूरी खा जाता हूँ।

सुनकर पूरी कक्षा ठहाके मार कर हँसने लगी।

हमारे अन्तर में यह विचार होना चाहिये कि हम जिनाज्ञा का कितना पालन करते हैं। या अपने स्वार्थ के लिये जिनाज्ञा की व्याख्या अपने मन मुताबिक करने लग जाते हैं! जिनाज्ञा का अक्षरशः पालन करना ही धर्म है। न कम, न ज्यादा!

''मैं समय हूँ''

-मेधावी जैन

मैं समय हूँ, मैं शाश्वत हूँ
अर्थात् न मेरी कोई शुरूआत है,
न ही मेरा कोई अंत है,
मैं तो हूँ अनंत,
मेरे सामने यहाँ क्या कुछ न हुआ,
मैंने क्या कुछ न देखा,
पुण्य होते आये, पाप होते आये,
कितने ही काल परिवर्तित होते आये,
मैं साक्षी हूँ महापुरुषों के कर्मों का,
महापापियों के पापों का,
मैंने देखा प्रभु को भी,
और पतित को भी,
प्रलय को आते देखा,
और पुनः उसे हरा भरा होते देखा,
सुख ही सुख भी देखे,
व पापों को बढ़ते देखा,
धर्म को भी देखा अधर्म को भी देखा,
फिर वही जीव आये और गए,
जब तक वे मोक्ष को न पा गए,
मनुष्य न पा पाया थाह मेरी,
न समझी उसने मेरी कीमत,
किन्तु निकल गया जब मैं हाथ से,
तब पछताते रह गया,
जब मैं बीता तो लौट के न आया,
क्यूंकि चलता हूँ मैं इक तरफा,
यही है मेरा परिचय- मैं हूँ समय,
मैं हूँ समय...

श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरुभ्यो नमः

श्री कोयम्बतूर नगरे

स्वद्रव्य से निर्मित

श्री स्तंभन पार्श्वनाथ जिन मंदिर

एवं

श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी

की अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को सादर आमंत्रण

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

शुभ मुहूर्त

वि. सं. 2071 माघ सुदि 14 सोमवार ता. 2 फरवरी 2015

महोत्सव स्थल

59 रॉबर्टसन रोड, श्री नेहरु विद्यालय रोड,
चिन्मय विद्यालय के सामने, आर.एस. पुरम
कोयम्बतूर- 641002

निवेदक

विजयचंद-सौ. पारसमणि देवी

पुत्र कुशल झाबक परिवार फलोदी निवासी हाल कोयम्बतूर

जय श्रीश्रीश्री जिनदत्तसूरि जैन दादावाडी ट्रस्ट

RNI ; RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

ॐ ह्रीँ अर्हं नमः
।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।
।। दादा गुरूदेव श्री जिनदत्त चन्द्र-कुशल-चन्द्रसूरि सद्गुरूभ्यो नमः ।।
।। गणनायक श्री सुखसागर-जिनहरि-जिनकांतिसागरसूरि गुरूभ्यो नमः ।।

दक्षिण प्रदेश के श्री तिरुपुर नगरे

नवनिर्मित विशाल शिखरबद्ध श्री पार्श्व जिन मंदिर व
श्री जिनकुशलसुरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा निमित्ते

महोत्सव मुहूर्त्त व
निश्रा प्रदाता
पूज्य उपाध्याय मरुधरमणि
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

सादर आमंत्रण

जाजम मुहूर्त्त
दि. 16.10.2014
प्रातः 8.30 बजे

मार्गदर्शन व कुशल संचालन
सिरोही (राज.) निवासी शासनरत्न
श्री मनोजकुमार बाबुमलजी हरण

पावन प्रतिष्ठा दिवस
दि. 26.1.2015
माघ सुदि 7, सोमवार

आप सर्व से निवेदन कि इस अवसर पर
परिवार सहित जरूर पधारें। शासन की शोभा बढ़ावें

निमंत्रक - श्री पार्श्वकुशल जैन सेवा ट्रस्ट, तिरुपुर (तमिलनाडु)

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, मांडवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, बिलानी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408